Hindi - Dr. Manisha Markam.

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 5.610 (2018)

...veen Shodh Sansar

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)

नवीन शोध संसार

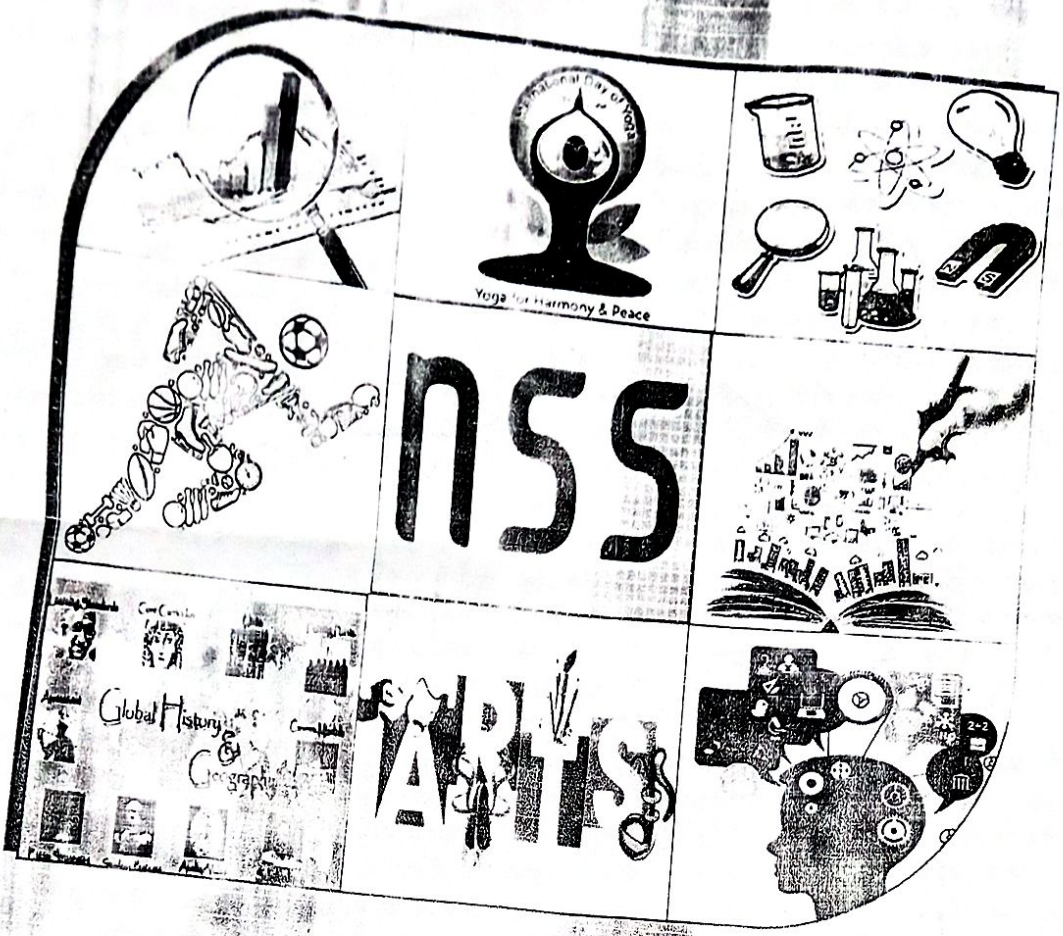

Editor Ashish Narayan Sharma

...e Add. "Shree Shyam Bhawan", 95, Vikas Nagar Extension 14/2, NEEMUCH (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, Email : nssresearchjournal@gmail.com, Website www.nssresearchjournal.com

een Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.610 (2018) April To June 2019, Volume I

अस्तित्व – जीवन पर्यन्त एक तलाश

डॉ. मनीषा सिंह मरकाम *

ावना – हमारे देश में तमाम प्रयासों के बावजूद भी सवाल वहीं स्थिर हैं विवाह के लिए लडकी से खुलकर यह नहीं पूछा जाता कि उसे लडका पसंद है या नहीं। उसी तरह सामाजिक प्रभाव सुशी पर भी थोपा गया है कि वह भी यह नहीं बता पाई कि जिससे उसका ब्याह हो रहा है, वह उसे पसंद करती भी है या नहीं ? सुशी को विवाह से पूर्व जिससे वह विवाह करने जा रही है, उसके दर्शन भी करवाए गए या नहीं यह तो सामाजिक दृष्टिकोण के कारण विचारणीय बिंदु है ही नहीं ? सुशी का विवाह सभी घर के बडों द्वारा लड़के के अद्भुत गुण, रंग- रूप कद कांठी आदि देखकर कर दिया जाता है। मानसिकता का यही फर्क है कि जिसको जिसके साथ जीवन यापन करना है उससे सलाह लेना कोई जरूरी नहीं समझता परिणामतः प्रभाव जीवन भर गूँजते है – पर मां पिताजी ने जिसके गले बाँध दिया आना ही पडा मन उचाट हो गया ....अपनी जिद में पहली रात्रि से ही शारीरिक दूरी बनाए रखी। यदि हम पड़ताल करे तो शायद हर घर में विवाह से संबंधित हकीकत कुछ और होगी और फसाना कुछ और होगा। विवाह में पसंद का होना आवश्यक तत्व है क्योंकि विवाहेत्तर जीवन का एक-एक सिरा कई दूसरे मनोभावों से जुडता ही चला जाता है, इसके एक तार भी ढीले हो तो आवाज बेहद बेतुकी आने लगती है। आकर्षण का केन्द्र प्रारंभ में तो शरीर ही होता है, यदि इसमें रूचि ना हो तो आकर्षण के आयाम सिमटने लगते हैं।

साधारण जीवन में एक अच्छा इंसान होने के बावजूद रंग-रूप, नयन-नक्श महत्तर स्थान रखते हैं, हमारे परिवारों में बहु प्रकृति के व्यक्ति होते है, हम सभी को अपने अस्तित्व का तहे दिल से स्वागत कर उस अस्तित्व को अपनाना चाहिए फिर चाहे हमारा रंग काला गोरा या गेहुँआ ही क्यों ना हो, किसी कालेपन को कमतर आँकना हमारी हमारे गोरेपन की मानसिक गुलामी के भाव झलकाता है, जबकि बुराई रंग में नहीं हमारी समझदारी में होती है कि हम अपना भविष्य अपने सोचने समझने की क्षमता को सिर्फ रंग के आकर्षण के कारण किस तरह प्रभावित कर रहे हैं - 'केवल एक गौर वर्णी शरीर की मालकिन.........क्योंकि उसने पहली ही मुलाकात में जता दिया था कि मेरी सब सहेलियाँ सब रिश्तेदार कहते हैं, सुशी तू इतनी गोरी चिट्टी तेरा लाड़ा काला भौंचक मैं उतरती तय की इस कराक को जानकर।' रंग के कारण सब कुछ अस्वीकार यह विवाह की सबसे दुखद पहलू इसलिए है कि विवाह पूर्व सुशी से इस विषय पर कभी चर्चा ही नहीं की गई, इसलिए कुंठित होकर विवाह धीरे-धीरे आगे बढता रहता है इसके नतीजे और भयावह संकेत के खतरे हमें आगे देखने को मिलते हैं। जीवन भर शिकायतें चलती रहती हैं। सुशी के अपने पति की गोरा रहने की चाह स्वाभाविक थी क्योंकि आज के माहौल में स्वस्थ और सुंदर जोडे का दिखना सभी पहलुओं की अनिवार्यता है - 'किस्मत ने काला लाड़ा भाग्य में लिख दिया जो मुझसे मेल नहीं खाता' ....सुनकर लगा कहीं तो कुछ असामान्य हैं..... सुशी मूलतः - गौर वर्ण थी, उसे सुंदरता बढ़ाने के लिए किसी कॉस्मेटिक या किसी तकनीकी के अधीन रहने की जरूरत नहीं थी पर जैसे वह अपने पति पर नजर डालती उसे लगता उसकी जिंदगी वीरान हो गई हो उसकी आँखे सदा भावहीन रहती।

उसके सपनों के रंगों में उदासी का घना अंधेरा पूरे जीवन भर छाया रहा उन सपनों के धूसर रंगों की उदासी को अभिव्यक्त करने के लिए सुशी के पास कोई अपना नहीं था यही वजह थी कि वह अंदर घुटती चली गई सुशी ने कडा रेखांकन अपने आसपास बना लिया। उन रेखांकनों की कठोरता के कारण सुशी के ससुराल वालों ने यह विचार किया कि अब सुशी को मायके छोड दिया जाना चाहिए किन्तु नियति को कुछ और ही मंजूर था लेखिका डॉ कला जोशी ने लिखा है - 'जिस पति को काला समझकर मैंने नाक सिकोडी थी ....उसीने मुझे मायके भेजने का विरोध किया.... जिसे ब्याह कर लाया हूँ अब वहीं मेरा भाग्य है, वह यहीं रहेगी कहीं नहीं जाएगी,.... कह कर सबका मुँह बंद कर दिया था। मेरी स्थिति का फैसला भी हो गया........ मैंने मन पाखी के पर कुतर दिए जीवन की गाडी किसी तरह चलने लगी।'

मेरा जीवन जैसे ओस की बूंदों से भीग गया था जिसमें नमी तो थी जो ऊपर से बेहद सुंदर दिखाई दे रहा था किंतु उस ओस की नम हवा अपने साथ मनहूसीयत अलगाव के भाव भी दबाए बैठी थी - 'घर में कैद होकर रह गई उन्होंने कभी साथ ले जाना गंवारा नहीं समझा।मेरी दौड सिर्फ मायके तक थी जहाँ उनके ऑफिस जाते ही में प्रायः रोज चली जाती अब तक एक बेटी और बेटे की माँ बन चुकी थी, पर उनकी परवरिश सासूजी ने ही की।' सभी ने मेरी स्थिति को दल कर रख दिया सभी की प्रकृति मेरे साथ अजीब सी हो गई सभी की लापरवाही मेरे प्रति मुझे दिखाई देने लगी मेरे जीवन में अचानक बिजली तब चमक उठी जब मेरे अपने बच्चे, दादी पापा के मुखापेक्षी बने रहे, मुझे घर में गंवार करार कर दिया गया, मुझे अपने ही घर में अपने ही बच्चों से विमुख कर दिया गया मैं तो सिर्फ दर्शक की भाँति अपने जीवन का उपसंहार देखने में लगी थी जिस पर कोई ना कोई जुमला रोज फेंक दिया जाता है जिससे मेरे बच्चों के दिल में मेरी कोई अहमियत नहीं रह गई थी।

डॉ. कला जोशी की कहानी 'अस्तित्व' में यह सतत् विचारणीय है कि अंत समय में भी सुशी की पसंद का ध्यान नहीं रखा गया उसे सदैव रिश्तों से कड़वाहट ही प्राप्त हुई उसकी उपस्थिति सदैव महत्वहीन बताकर उसके महत्व को कभी स्वीकार नहीं किया उसके जीवन की हर इच्छा को भाग्य पर छोड कर उसके प्रश्नों के उत्तर के प्रति ध्यान नहीं दिया जाता था। सुशी को लेकर परिवार के सभी सदस्यों ने छोटी साच धारण का रखी थी। उसका अपना पूरा जीवन ठगा सा बीत गया वह कभी यह तय नहीं कर पाई कि जो कुछ भी उसने पाया क्या वह किसी ने बलपूर्वक उसे प्रदान किया था या स्वेच्छा से वह इन सभी रिश्तों को निभाना चाहती थी? क्या परिवार के किसी एक रिश्ते ने भी भीतर एक उम्मीद की चिंगारी भी जीवित रखी थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. कला जोशी की कहानियाँ।

* सहायक प्राध्यापक, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

Hindi 02

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal
ISSN [illegible], E-ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.610 ([illegible]) April To June 2019, Vol

[illegible]माचार पत्र और हिन्दी प[illegible]रिता

डॉ. बिन्दु परस्ते *

प्रस्ताव[illegible] [illegible]कारिता के समक्ष विद्यमान चुनौतियाँ पर विचार [illegible] है कि [illegible] हमें आत्म- निरीक्षण करना चाहिए और [illegible] रक ब[illegible] के लिये संकलित प्रयास करने चाहिए। हिन्दी समा[illegible] पत्रों के समक्ष आज [illegible] चुनौतियाँ हैं, वे कुछ तो बाहर से हैं और कुछ तो [illegible] से। 21 वीं सदी की मुख्य चुनौतियों को रेखांकित करना और [illegible] पर विचार करना [illegible]री है। संचार माध्यमों के बीच प्रतिद्वंदिता अब देश [illegible] जा रही है और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी इस क्षेत्र में प्रवेश कर रही है। [illegible] सरकार [illegible] प्रिंट मीडिया ने 26 प्रतिशत की घोषणा [illegible] जिस [illegible] नीति [illegible] विदेशी पूंजी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों [illegible] रहे हैं, [illegible] समाचार पत्र उद्योग को कितने के दिन और [illegible] होगा। [illegible] उन्हीं के स्वार्थों की रक्षा करेगी? [illegible] लिए होने [illegible] तो समाचार पत्रों की सार्वजनिक [illegible] की रक्षा [illegible] हो पाएगी।

भारत के [illegible] सारी [illegible] वृत्तियाँ इस क्षेत्र में प्रवेश कर गयी हैं। [illegible] के मिशन पर आधारित होनी चाहिए। यह सार्वजनिक [illegible] और कर्त्तव्यों एवं दायित्तवों का निर्वाह [illegible] लोगों का ही नहीं, समाज एवं [illegible] और इस [illegible] विशिष्टता बनाए रखने के लिए इसे [illegible] होगा। [illegible] तक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न [illegible] विषय [illegible] लिखने, पढ़ने, बोलने, संकेत करने, [illegible] किसी भी स्वतंत्रताऐं भी इसी के अंतर्गत [illegible] के लिए कोई भी योग्यता निर्धारित नहीं [illegible]

हम जिस [illegible] तत्व है। दैनिक अखबारों [illegible] प्रतियोगिता मूल्य पर समाचार पत्र प्रकाशि[illegible] घाटा उठाने के लिए तैयार हो। [illegible] उसमें लगे कागज का मूल्य [illegible] अब इसकी प्रतिपूर्ति विज्ञापनों [illegible]

सूचना के [illegible] समाचार पत्र और प्रत्येक नागरिक [illegible] संचार माध्यमों या समाचार [illegible] निर्वाह पर अंगुलियाँ उठने लगी [illegible] करके, उन्हें आधे [illegible] का प्रदर्शन करके, [illegible] माध्यम अपने पैर में कुल्हाड़ी [illegible] आजादी का

हमारे देश में धड़ल्ले से [illegible] हो रहा है [illegible] प्रकार स्[illegible] दायित्वहीन आजादी देश के लिए अनर्थकारी सिद्ध हो र[illegible]

सुबह के अखबार [illegible] चोरी, डकैती, हत्याऐं, दंगे- चरित्र- हनन, अधनंगे, [illegible] और मन को खिन्न कर दे[illegible] दृश्यों से भरे होते हैं। खबरों पर राजनीति हावी [illegible] है। आ[illegible] गतिविधियों के एक ही [illegible] विशेष [illegible] उजागर। क्या समाज में केवल अ[illegible] घटनाऐं ही [illegible] हैं? ऐस[illegible] हमारी दृष्टि और रुचि भ्रष्ट [illegible] गई है, जिस कारण ऐसी दु[illegible] बीच [illegible] आज [illegible] लोगों और उनके अच्छे क[illegible] बुरे लोगों और बुरे कार्यों से [illegible] है। [illegible] कार्यों और उ[illegible] के सुकृत्यों की चर्चा नगण्य [illegible] और ह[illegible] नहीं जाती?

पत्रकार भावनाप्रवण [illegible] विश्लेषक और [illegible]द्धिक [illegible] जो लोकमत में [illegible] उनके [illegible] मंथन करत[illegible] जनभावनाओं को [illegible] किन्तु जब मिशन से प्रोफेशन [illegible] आकर्षण[illegible] पत्रकारिता उपेक्षित हो गई [illegible]

कहना अनुचित न होगा [illegible] देश में [illegible] ही सम[illegible] जो कहीं-न-कहीं [illegible] किसी [illegible] रूप किसी का [illegible] कोई छो[illegible] किसी के [illegible] हम [illegible] संबोधित करते हैं।

अनेक [illegible] पर सरकारें [illegible] नीतिगत [illegible] कर रहें हैं।

पहले पत्र संपादक [illegible] नाम [illegible] जाता था [illegible] घराने के नाम से [illegible] हटाकर कुछ न[illegible]

समाचार [illegible] मीडिया के प्रति आस्था [illegible] विश्वशांति, किसी देश [illegible] गए और अखब[illegible]

हमारे य[illegible] दूरदर्शन और रेडि[illegible] है।

विदेशी [illegible] आवष्यकताऐं, [illegible]

* [illegible] शासकीय कला एवं वाणि[illegible]

शैली किस प्रकार [illegible] की आवश्यकता नहीं है। भारतीय शरबत [illegible] पन धीरे-धीरे क्षितिज से ओझाल हो रहा है और पेप्सी एवं [illegible] के प्रमुख विन्दु बन गए है। [illegible]वादी और उप[illegible] [illegible]

पाठकों का आव[illegible] बिन्दुओं का पता लगाकर समाचार पत्र [illegible] की प्रक्रिया पिछले कुछ दशकों से चल रही हैं। नई [illegible] गति को बहुत तेज कर दिया है।

[illegible] लिया है। इनके लिखे हुए अक्षर [illegible]

हमारे देश की पत्रका[illegible] गाँवों की [illegible] भारत गांवों का देश है। वहाँ के अखबारों [illegible] पड़ती हैं। दुर्दांत अपराधियों, हत्या के [illegible] आदि [illegible] है किन्तु [illegible] पुरुषार्थी [illegible] कम जाती है।

आजादी मिले आधी [illegible] शहरी समाचार पत्रों में गांवों की [illegible] प्रयोग हो रहा हैं।

न्यूजप्रिंट की कीमतों [illegible] इसका सामना वे अखबार [illegible] कर रहें हैं, जिनके [illegible] मालिकों पास पैसा पर्याप्त है किन्तु [illegible] एवं अन्य भाषा पत्रों [illegible] यह एक संकट बना हुआ है। [illegible] बड़े अखबारों के [illegible] हैं। इस समस्या का [illegible] करने में ही हैं। हिन्दी भाषा [illegible] और शुद्ध का सवाल भी ध्यान देना आवश्यक [illegible] समाचार पत्रों के प्रकाशन [illegible] सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर के नवो[illegible] इलेक्ट्रॉनि[illegible] टेलिप्रिंटर, फोटो [illegible] डी.टी.पी. आदि ने [illegible] रोटरी की बहुरंगी छपाई ने [illegible] कर है। गाँव-गाँव में अखबार [illegible] कारण गाँ[illegible] में क्रयशक्ति कम जरूर है [illegible] पढते ही हैं। इतने [illegible] होती जिसमें ग्रामीण पा[illegible]

शिक्षा का प्रसार [illegible] चुनौतियाँ है और रहेंगी। [illegible]

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पत्रकारिता का [illegible]
2. हिन्दी पत्रकारिता [illegible]

****

Our Heritage Journal (ISSN 0474-9030)

Our Heritage Journal

Certificate

THIS IS TO CERTIFY THAT

Dr. Mamta Chandrashekhar

HAS BEEN AWARDED CERTIFICATE OF PUBLICATION FOR RESEARCH PAPER TITLED

Political Status of Women in India with special reference to erstwhile state of Jammu and Kashmir

PUBLISHED IN VOL- 22, NO 1, 2020 OF OUR HERITAGE JOURNAL WITH ISSN 0474-9030

UGC CARE APPROVED INDEXED AND REFERRED JOURNAL

IMPACT FACTOR 6.3

This paper can be downloaded from official website : ourheritagejournals.com

Journal ISSN Chief Editor

Our Heritage Journal (ISSN 0474-9030)

Volume 22, No 1, 2020

Political Status of Women in India with special reference to erstwhile state of Jammu and Kashmir

Shahida Shafi[1], Dr. Mamta Chandrashekhar[2]

ABSTRACT

Women make-up half of the world's population, no country can affords to ignore the skills, talents, and experiences of half its people. The status of women in erstwhile state of Jammu and Kashmir has been a checked one as it has been ups and downs, which affected the status of women. Women participation in mainstream politics has important implications for the broader arena of governance in any country. But women's participation in politics of erstwhile state of Jammu and Kashmir is still not very impressive. The number of women Politian's is very small as compared to men. In this context the present study analysis the participation and representation of women in the politics of erstwhile state of Jammu and Kashmir.

Keywords: Politics, Participation, Representation, Voting,women.

I. INTRODUCTION

Every country in the world had half a population of women folks, but this share of population has been kept aside in the sphere of politics. In society of erstwhile state of Jammu and Kashmir, the women always witnessed varying fortunes as there are many ups and downs, which affected the women of the state. To make their presence felt the women of Jammu and Kashmir had always struggled, so that their voice has been heard in the society. After the participation of women masses in 1930's sociopolitical moments there has been an increase in number of women participation of Jammu and Kashmir state politics. Till 13th century only noble women enjoyed political freedom and exercised power and responsibility. The king discusses the problems of vital importance with his queen and also took the queen's advice. With the beginning of Muslim rule during the 14th century in Jammu and Kashmir, the position and status of women started to degrade. They started to live a miserable life as their political rights had snatched. During the early phase of 20th century freedom struggle against the Dogra dynasty has started in Jammu and Kashmir. Women from the valley had participated in those

[1] *Research Scholar, School of Social Science DAVV Indore*
[2] *Prof. Political Science, GACC, Indore*

THINK INDIA JOURNAL

certify to all that

Dr. Mamta Chandrashekhar

has been awarded Certificate of Publication for research paper titled

Published in Vol-22-Issue-14-December-2019 of THINK INDIA JOURNAL with ISSN:: 0971-1260

Political Participation Of Women In India: With Special Reference To Madhya Pradesh

UGC Care Approved International Indexed and Referred Journal

Impact Factor 6.2

Indexed with Crossref and DOI https://doi.org/10.26643/think-india

S.H.Sharma

Editor, Think India Journal

Dr. Mamta Chandra Shekhar

Pol. Sc. (2)

THINK INDIA JOURNAL

ISSN:0971-1260
Vol-22-Issue-14-December-2019

Political Participation Of Women In India: With Special Reference To Madhya Pradesh

Shahida Shafi[1] & Dr. Mamta Chandrashekhar[2]

Abstract:

Women are God's greatest gift to humanity. They are the power of creation. Today, women empowerment has gained importance on the global front. Women's empowerment is a worldwide issue, and discussions on women's political rights are at forefront of many formal and informal campaigns worldwide. For centuries, women were not treated equal to men in many ways, they were not allowed to own property, they did not have a share in the property of their parents, they had no voting rights, and they had no freedom to choose their work or job and so on. As now the women have come out of there dark days of oppression, there is need for strong movement to fight for the rights of women and to ensure that they got all the rights which men have or in other words a movement for the "Empowerment of Women". The present study examines the role and status of women in polities of Madhya Pradesh and their growing status with special focus of identifying the causes responsible for their marginal representation in the state politics.

Keywords: Women, Independence, politics, voting, participation.

Introduction

India is a complex country. We have, through centuries, developed various types of customs, traditions and practices. These customs and traditions, good as well as bad, have become a part of our society's collective consciousness. We worship female goddesses; we also give great importance to our mothers, daughters, sisters, wives and other female relatives or friends. But at the same time, Indians are also famous for treating their women badly both inside and outside their homes. Indian society consists of people belonging to almost all kinds of religious beliefs. In every religion women

[1]Research scholar, School of social science DAVV Indore
[2] Prof. Political science, GACC, Indore

Copyright © 2019Authors

Airtel 5:10 PM Dr. Shiva Khande

Hist (1)

Done nss vol. 1.jpg

Volume I, Issue XXVII
July to September 2019

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 5.610 (2018)

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

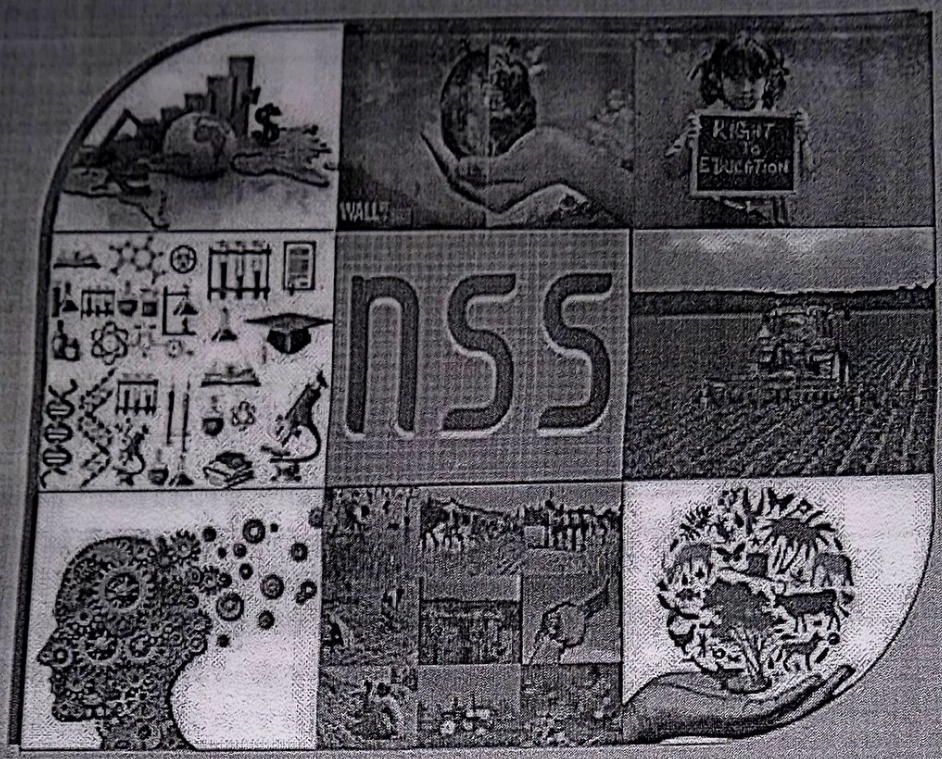

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, NEEMUCH (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, Email : nssresearchjournal@gmail.com, Website www.nssresearchjournal.com

S.K. 3/7/20

Dr. Shiva Khandelwal
Associate Professor History
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts & Commerce College
Indore (M.P.)

Done NSS July to September 2019 V... (A)

Index/अनुक्रमणिका

01. Index/ अनुक्रमणिका 01

02. Regional Editor Board / Editorial Advisory Board 04/05

03. Referee Board 06

04. Spokesperson 08

(Science / विज्ञान)

05. Ethnobotanical Study Of Traditionally Used Medicinal Plants By Tribes Of District Guna, Madhya Pradesh, India (Rakesh Samar, Manju Jain, P. N. Shrivastava) 10

06. Synthesis Of Ketones Derived From Malon P-Ehyl Anilic Acid Hydrazide As Biological Evaluation (Malti Dubey) 16

07. पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्राथमिक शिक्षा पर होने वाले प्रभावों का शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में समीक्षात्मक अध्ययन (डॉ. अंजना पाटनवाला) 19

(Commerce & Management / वाणिज्य एवं प्रबंध)

08. राजसमन्द में पर्यटन प्रबन्धन एवं समस्याएँ (डॉ. तरुण दुबे) 22

09. सतना जिले में स्थापित सीमेंट उद्योग के कारण पर्यावरण में आए परिवर्तन का अध्ययन (डॉ. देवेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, आशीष सिंह) 25

10. वाणिज्यिक वाहनों का मध्यप्रदेश के सामाजिक विकास में योगदान (सुस्मिता हिरवे, डॉ. पी. एल. पाटीदार) 27

11. दुग्ध व्यवसाय और स्वरोजगार – एक अध्ययन (डॉ. बालमुकुन्द बघेल) 29

12. मौसम आधारित फसल बीमा योजना का क्रियान्वयन एवं प्रभाव का अध्ययन (डॉ. सीमा परमार) 32

(Economics / अर्थशास्त्र)

13. A Study For Current Situation Of Solar Energy In Rajasthan (Harjeet Singh) 34

14. विपणन क्रियाओं का फसल के दौरान कृषकों पर आर्थिक प्रभाव (हरिमोहन बैरवा, डॉ. एन. के. पटेल) 37

15. जनजातीय कृषकों के आर्थिक विकास में नई कृषि तकनीकों का योगदान – (मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के विशेष संदर्भ में) (वन्दना कलमे) 41

(Political Science / राजनीति विज्ञान)

16. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम के क्रियान्वयन में पंचायतों की भूमिका (झाबुआ जिले के विशेष सन्दर्भ में) (मुकेश डामोर, डॉ. नलिन सिंह पंवार) 44

17. स्वास्थ्य संबंधी मानवाधिकार एवं भारत – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. संगीता विजय, सुनीता गुर्जर) 47

S.Khand 9/7/20

Dr. Shiva Khandelwal
Associate Professor History
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts & Commerce College
Indore

Done NSS July to September 2019 V...

NSS Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.610 (2018) July To September 2019, Vol. I

(History / इतिहास)

18. होमरूल आंदोलन एवं उसका सतपुड़ांचल पर प्रभाव (डॉ. संकेत कुमार चौकसे) 51
19. मैडम भीकाजी कामा का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान (डॉ. शिवा खण्डेलवाल) 54

(Sociology / समाजशास्त्र)

20. सूचना प्रौद्योगिकी से शिक्षा विभाग में कार्यरत महिलाओं का सशक्तिकरण (सपना राठौड़) 56
21. स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं के बीच शिक्षा के प्रति जागरूकता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 60
(छिंदवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में) (डॉ. फरहत मंसूरी)

(Geography / भूगोल)

22. Analysis Of Ground Water Level And Rainfall Patterns In Upper Narmada Basin 63
(Vinay Ralkwar)
23. समन्वित क्षेत्रीय विकास एवं नियोजन – जनपद सागर का प्रतीकात्मक अध्ययन (हरिदास अहिरवार) 67
24. आदिवासी बहुल्य क्षेत्र का विकासात्मक परिवर्तन (खरगोन जिले के विशेष सन्दर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन) 70
(डॉ. आर. आर. गोरास्या, प्रो. सुरेश अवासे)
25. ग्वालियर संभाग के सन्दर्भ में पुरुष साक्षरता एवं महिला साक्षरता का तुलनात्मक कालिक विश्लेषण 2001–2011 ... 74
(महिमा राठौड़)

(English Literature / अंग्रेजी साहित्य)

26. Resilient Women In The Works Of Amitav Ghosh (Dr. Sr. Hansa Paul) 76
27. The Rise Of Personal Essay In The Age Of Lamb (Dr. Jalaj Dixit) 78
28. Autobiographical Touch In The Work Of Shanta Bai Kamble (Anuradha Shrivastava) 80

(Hindi Literature / हिन्दी साहित्य)

29. मोहन राकेश के उपन्यासों में सामाजिक समस्याएं (डॉ. प्रणति बेहेरा) 83
30. अज्ञेय के सृजनात्मक साहित्य में स्वाधीनता के मूल्यों (आस्तिकता) के विविध आयाम (डॉ. अनुकूल सोलंकी) 88
31. कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में स्त्री विमर्श - विविध सरोकार (राजश्री रांगर, डॉ. चंद्रलेखा जैन) 91
32. शिक्षा, व्यवस्था और प्रेमचन्द कृत 'बड़े भाईसाहब' (डॉ. जया प्रियदर्शिनी शुक्ल) 94
33. जयशंकर प्रसाद के नाटकों में गुप्तकालीन सामाजिक जीवन (डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव) 97
34. समकालीन कहानियों में यथार्थवाद के बहुआयामी स्वरूप (संगीता बघेल, डॉ. ज्योति सिंह) 100
35. साहित्यकार अमृतराय के 'जंगल' उपन्यास में जीवन मूल्य की अभिव्यक्ति का अध्ययन 103
(डॉ. विनय कुमार सोनवानी)
36. मुक्तिबोध के काव्य में युगीन चेतना (डॉ. रंजना मिश्रा) 105
37. मुंशी प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी संघर्ष (डॉ. आशा शरण) 107

9/7/20

Dr. Shiva Khandelwal
Associate Professor History
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts & Commerce College
Indore (M.P.)

Done NSS July to September 2019 V...

NSS Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.610 (2018) July To September 2019, Vol. I

मैडम भीकाजी कामा का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

डॉ. शिवा खण्डेलवाल*

प्रस्तावना – मैडम भीकाजी कामा एक महान महिला स्वतंत्रता सेनानी थी। जिन्होंने भारत के बाहर रहते हुए भी देश में आजादी की लड़ाई शुरू की थी। वे ऐसी प्रथम महिला सेनानी थी, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय असेम्बली में भारत का ध्वज फहराया था। इनका पूरा नाम भीकाजी रूस्तम कामा था। 24 सितम्बर 1861 को बम्बई के एक व्यापारिक घराने में इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम सोराबजी फ्रेम जी पटेल व माता का नाम जिजि बाई था। इनकी शिक्षा अलेक्जेण्डर नेटिव गर्ल्स इंगिलश इंस्टीट्यूट में हुई, जहाँ उन्होंने भारतीय व विदेशी भाषाओं में निपुर्णता प्राप्त की। सन् 1885 में उनका विवाह रूस्तमजी के साथ हुआ। राजनैतिक व्यस्तता के कारण उनका वैवाहिक जीवन सफल नहीं हो पाया लेकिन उन्होंने इसकी कभी परवाह नहीं की। वे कहा करती थी कि 'मेरा विवाह तो मेरे उद्देश्यों के साथ हो चुका है।' विवाह के बाद भी उन्होंने अपना अधिकांश समय सामाजिक कार्य और समाज कल्याण में व्यतीत किया।

किशोरावस्था में ही उन्होंने राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय से ही वे उसमें सक्रिय हो गई थी।

19वी शताब्दी के अंत में बम्बई शहर में प्लेग जैसे संसर्ग जन्य रोग के कारण जब बहुत से लोगों की जानें जाने लगी तब भीकाजी अपनी परवाह किए बिना रोगियों की सेवा कार्य में लग गई। जिससे उन्हें भी यह रोग हो गया। बीमारी ठीक होने पर आराम के लिए 1902 में उन्हें यूरोप भेजा गया। जर्मनी, स्कॉटलैण्ड और फ्रांस में एक-एक वर्ष रहकर वे 1905 में लंदन आई। यहाँ दादा भाई नौरोजी के खास सचिव के रूप में डेढ़ साल तक उन्होंने कार्य किया। उन्होंने वीर सावरकर की पुस्तक 'दि हिस्ट्री ऑफ दि वार ऑफ इंडियन' का फ्रांसीसी भाषा में अनुवाद भी किया।

इंग्लैण्ड में ही उनकी मुलाकात सुविख्यात क्रांतिकारी श्याम जी वर्मा व वीर सावरकर के साथ हुई। इन तीनों ने मिलकर 1905 में अपने तिरंगे का प्रारूप निश्चित किया। इस तिरंगे पर सबसे ऊपर हरे रंग की पट्टी और उस पर दिखाया खिलता हुआ आठ पंखुरी का कमल, यह तात्कालीन भारत के 8 प्रांतों के जैसे प्रतिनिधित्व करने वाला था। बिचली पट्टी पर नारंगी रंग पर लिखा हुआ 'वंदे मातरम' शब्द जैसे भारत माता के अभिवादन के लिए लिखा हुआ था और नीचे की लाल पट्टी पर बाईं तरफ आधा चन्द्रमा और दाईं तरफ में उगता हुआ सूर्य क्रमश: इस्लाम और हिन्दू धर्म का प्रतीक था। यह झंडा अब पुणे की केसरी मराठा लाइब्रेरी में प्रदर्शित है।

क्रांतिकारी श्याम जी वर्मा के जोशीले भाषणों से मैडम कामा इतनी *प्रभावित हुई कि उन्होंने भारत लौटने का इरादा छोड़कर वहीं स्वतंत्रता संग्राम छेड़ दिया। यहाँ हाइड पार्क में अपने जोशीले भाषणों से आजादी का बिगुल* बजाया। इससे इंडिया ऑफिस के अधिकारियों ने क्रोधित होकर उन्हें भारत लौट जाने को कहा किन्तु मैडम कामा ने उनकी बात न मानकर अपने आंदोलन को और तेज कर दिया।

मैडम कामा के जोशीले भाषणों व अंग्रेज विरोधी गतिविधियों के कारण उन्हें बलपूर्वक बाहर निकाल देने की धमकी दी गई, पर उन्होंने कोई परवाह नहीं की। उनके विरूद्ध कठोर कार्यवाही की खबर मिलने पर उन्होंने फ्रांस पहुँचकर पेरिस को अपना कार्यस्थल बनाया। वहाँ उनका घर क्रांतिकारियों का आश्रय स्थल था। वे पेरिस में करीब 35 वर्षों तक रहीं।

फ्रांसीसी सरकार से सुरक्षा का आश्वासन पाकर भीकाजी ने वन्दे मातरम् पत्र का प्रकाशन भी प्रारम्भ कर दिया। यह पत्र जेनेवा से निकाला जाता था जो 09 वर्षों तक लगातार प्रकाशित हुआ। उन्होंने विदेशों में रहने वाले सभी भारतीय क्रांतिकारियों के साथ अपना सम्बंध बनाए रखा। उन्होंने उन लोगों को अपना साथी बनाया जो विदेशों में रहकर परेशानियों में रहते हुए भारतीय स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने इंग्लैण्ड, रूस, मिस्र, *जर्मनी और आयरलैण्ड के क्रांतिकारियों के पास खिलौने की पेटियों में बड़ी* सावधानी के साथ छिपाकर हथियार भी भेजे थे। जो भारतीय विदेशों में जाकर पढ़ने के लिए तैयार थे, उनके लिए छात्रवृत्ति भी स्थापित की। सावरकर को जब काले पानी की सजा हुई तो उनके परिवार का पालन मैडम कामा ने ही किया।

18 अगस्त 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट में हुए अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में उनको भारतीय क्रांतिकारियों ने भारत का प्रतिनिधि बनाकर भिजवाया। इस सम्मेलन के नेता जीन जौरस ने सभा मंच से उनका परिचय 'फ्रेटरनल डेलीगेट' (हमसफर प्रतिनिधि) के रूप में दिया। वहाँ उन्होंने अपने ओजस्वी भाषण में कहा 'भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का बना रहना इस भारतवासियों के लिए अत्यधिक अपमान जनक और भारतवर्ष के लिए सर्वनाशक है। सम्पूर्ण विश्व के स्वतंत्रता प्रेमियों को विश्व की चौथाई से भी अधिक जनसंख्या वाले उस शोषित राष्ट्र की स्वाधीनता में अवश्य सहयोग देना चाहिए।' उन्होंने भारतवासियों को आव्हान किया कि 'आगे बढ़ो हम हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है।' उस समय मैडम कामा ने विदेशी भूमि पर समस्त प्रतिनिधियों के सामने भारत का राष्ट्रध्वज सबसे पहले फहराया। मैडम कामा पर किताब लिखने वाले डॉ. बी.डी. यादव ने लिखा है कि उस कांग्रेस में हिस्सा लेने वाले सभी लोगों के देशों के झंडे फहराये गये थे और भारत के लिए जो ब्रिटेन का झंडा था, उसे अस्वीकार करते हुए भीकाजी ने भारत का एक झंडा बनाया और उसे वहाँ फहराया। यह हरे, पीले और लाल रंग का था, जिसके मध्य में वन्दे मातरम् लिखा हुआ था। *तिरंगे झंडे की कल्पना भी सर्वप्रथम मैडम कामा के मस्तिष्क में आया था।*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

SKhu 9/7/20

Dr. Shiva Khandelwal
Associate Professor History
Shri Atal Bihari Vajpayee
Govt. Arts & Commerce College
Indore (M.P.)

अंतराष्ट्रीय पत्रिका -Bhugol Swadesh Charcha
(Multidisciplinary & Multilingual)
(ISSN : 2581-4788) I.F. 6.003

CERTIFICATE

THIS IS TO CERTIFY THAT

डॉ. गीता चौधरी

HAS PUBLISHED PAPER TITLED "मध्यकाल में शहरीकरण की अवधारणा एवं उसके मूल तत्व–एक ऐतिहासिक अध्ययन" ON

VOL. 15, ISSUE 02, OCTOBER 2019

IT IS DOUBLE BLIND PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL.
এটি ডাবল ব্লাইন্ড পিয়ার রিভিউড এবং রেফার্ড আন্তর্জাতিক জার্নাল।

Editor In Ch

gol Swadesh Charcha (Multidisciplinary International Journal)
d: BhugolSC-1197
Copyright 2019 ... rights reserved

मध्यकाल में शहरीकरण की अवधारणा एवं उसके मूल तत्व–एक ऐतिहासिक अध्ययन

गिरजा शंकर पटेल
रिसर्च स्कॉलर, समाज विज्ञान अध्ययन शाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, (म.प्र.)
डॉ. गीता चौधरी
प्रोफेसर, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर, (म.प्र.)

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यकाल में शहरीकरण की अवधारण एवं उसके मूल तत्व पर ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाश डाला गया है। शहरीकरण तो प्राचीन काल से चली आ रही प्रक्रिया है। लेकिन मध्यकाल में शहरीकरण की जो अवधारणा विकसित हुई वह एक नये प्रतिमान हमारे सामने प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में शहरीकरण को परिभाषित करते हुए मध्यकाल में उसकी अवधारणा एवं उसके मूल तत्वों का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि शहरीकरण अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है।

शब्द कुंजी: मध्यकाल, शहरीकरण, अवधारणा, तत्व, ऐतिहासिक, विश्लेषण, हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, सिवीटास, अधोसंरचनाएँ, जनसंख्या, अर्थव्यवस्था, शहरी क्रांति, इंग्लैंड, पारम्परिक

प्रस्तावना

भारत प्राचीन काल से ही गाँवों का देश रहा है। इसकी अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण थी और गाँवों में निवास करती थी। जब हम शहरीकरण के ऐतिहासिक पृष्ठ–भूमि पर प्रकाश डालते है तो यह पता चलता है कि भारत में नगरो का इतिहास पूरे विश्व में सबसे पुराना है। प्राचीन काल में हड़प्पा व मोहन जोदड़ो की नगरीय सभ्यता इस बात का प्रमाण है कि भारत ने ही पूरे विश्व को सुव्यवस्थित और नये दृष्टिकोण से जीने की कला सिखाया। अतः हम कह सकते है कि भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया प्राचीन काल से ही चली आ रही है लेकि न मध्यकाल का शहरी–करण एक नये आयाम के साथ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर हमारे सामने आया जिसने शहरीकरण की अवधारणा को एक नई उँचाई प्रदान करके उसकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया।

मध्यकाल में शहरीकरण की अवधारणा

मध्यकाल में शहरीकरण की अवधारणा एवं उसके मूल तत्व पर प्रकाश डालने से पूर्व हमें नगर/शहर की परिभाषा को भली–भाँति समझ लेना आवश्यक है। नगर शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द श्ब्ज्त्र का हिन्दी रूपातरण है। श्ब्ज्त्र शब्द लैटिन के श्ब्टप्ज्न्त्र (सिवीटास) से बना है जिसका अर्थ है जिसका अर्थ है– "नागरिकता"। नगर की एक सर्वमान्य परिभाषा प्रस्तुत करना बड़ा जटिल कार्य है क्योंकि समाज शक्तियों के बीच नगर को परिभाषित करने में पर्याप्त मतभेद विद्यमान है नगर शब्द से अवधारणा, अमूर्तता, मूर्तता, कार्य, संस्कृति प्रारूप, वृद्धि एवं विकास जैसे पक्षों का बोध होता है। नगर के निवासी, उनके आवास, आवागमन, नगर में विद्यमान समस्त ऊपरी अधोसंरचनाएँ निर्मित एवं भंडारित वस्तुएँ, भोज्य–अभोज्य पदार्थ आदि और इन सबके कार्यात्मक एकीकरण के समग्र को नगर कहा जा सकता है।

ol Swadesh Charcha (Multidisciplinary International Journal)

per Id: BhugolSC-1327

opyright ... All right reserved

शर्की स्थापत्य कला : एक प्रांतीय स्थापत्य कला चरमोत्कर्ष

गिरजा शंकर पटेल
रिसर्च स्कॉलर, स्कूल ऑफ सोशल साइंस, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
डॉ. गीता चौधरी
प्रोफेसर, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर

सारांश – प्रस्तुत शोध पत्र में शर्की स्थापत्य कला का विश्लेषण किया गया है। मध्यकाल में शर्की राज्य का बोलबाला था। इस राज्य की सीमाएँ दूर–दूर तक फैली थी। यह दिल्ली सल्तनत की पूर्वी राजधानी थी। शर्की राज्य में जिस स्थापत्य कला का विकास हुआ उसे शर्की स्थापत्य कला शैली कहते है। यह एक नवीन स्थापत्य कला शली थी। इस स्थापत्य कला पर हिन्द् प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ा। पस्तुत शोध में यह दिखान का प्रयास किया गया है कि एक मुस्लिम स्थापत्य कला शैली होत हुए भी किस तरह से इस पर हिन्द् शैली का प्रभाव पड़ा और शर्की स्थापत्य कला किस प्रकार अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची। इसका ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है।

शब्द कुंजी : शर्की, स्थापत्य, चरमोत्कर्ष, ऐतिहासिक, फ्यूहरर, आर्किटक्चर, इम्मूएबल, खालिस मुखलिस, मेहराब, झंझरी, झझरियाँ, लाल दरवाजा, सिन्दूर, जामा, समिश्रण

प्रस्तावना

गोमती के पावन तट पर बसा जौनपुर भारत के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। अति प्राचीन काल में इसका आध्यात्मिक व्यक्तित्व और मध्यकाल में सर्वांगीण उन्नति शील स्वरूप हमारे समक्ष आता है। शर्की काल में यह समृद्धशाली राजवंश क हाथों सजाया गया। उस राजवंश न जौनपुर को अपनी राजधानी बनाकर इसकी सीमा को दूर–दूर तक फैलाया। यहां ऊंची–ऊंची अट्टालिकाएँ थी और पूरी राजधानी सुगंध से महकती रहती थी। राजनीतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक, कलात्मक, और शैक्षिक दष्टियों से जौनपुर राज्य की शान बेमिसाल थी।

ऋषि–मुनियों न तपस्या द्वारा इस भूमि को तपस्थली बनाया, बुद्धिष्टों न इसे बौद्ध धर्म का केंद्र बनाया। हिंदू–मुस्लिम गंगा–जमुनी संस्कृति गतिशील हुई। यह शिक्षा का बहुत बड़ा केंद्र रहा, यहां इराक, अरब, मिस्र, अफगानिस्तान, हेरात, बदख्शा आदि देशो से छात्र विद्या प्राप्त करन आते थे। इसे भारतवर्ष का मध्ययुगीन पेरिस तक कहा गया और 'शिराज–ए–हिंद' होने का भी गौरव प्राप्त हुआ।

जौनपुर की मस्जिदें अपनी विशिष्ट शैली के लिए विख्यात हैं। इस जौनपुर शैली को किसी बादशाह ने कहीं दुहराने का साहस नहीं किया। इसे शर्की स्थापत्य कला शैली कहते हैं। यही कारण है कि इतिहासज्ञों की दृष्टि जौनपुर शैली की इन इमारतों की ओर आकृष्ट हुए बिना नहीं रही। शर्की कालीन सभी इमारतें पत्थर, गारे और ककरीट से बनी है। गारे और ईटो की दीवारों पर सावधानी से कटे चौकोर पत्थर बड़ी सफाई के साथ जोड़े गए हैं। भीतरी स्तम्भ छतें और गुम्बद पत्थर के है। इनके बाहरी भागों पर प्लास्टर किया गया है। सजावट और सौन्दर्य वृद्धि के लिए काले संगमरमर का प्रयोग किया गया है।

स्थापत्य कला का चरमोत्कर्ष

शर्की स्थापत्य कला का चरमोत्कर्ष निम्नलिखित मस्जिदों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। जो मध्यकालीन प्रांतीय स्थापत्य कला में अपना एक अलग स्थान रखती ह।

Special Is...

Volume - 7...

KAAV™

International Journal of Economics, Commerce and Business Management

A Refereed Blind Peer Review Quarterly Journal

Dr. Lata Jain
Professor & Head
Dept. of Economics

8th International Conference on

"Paradigm Shift in Global Business Practices and Socio Economic Development"

Dec 14, 2019

ISSN: 2348 - 4969
...F: 8.9901(2018)

VISHISHT
SCHOOL OF MANAGEMENT

Kaav International Journal of Economics, Commerce & Business Management - A Refereed Blind Peer Review Quarterly E-Journal

(ISSN: 2348-4969)

Kaav International Journal of Economic, Commerce & Business Management is a quarterly online journal. The journal publishes abstracts of all papers online. To view full paper pdf, authors need to login to download their paper. Although, few of the papers are open access. This system is adopted to maintain security of data. It is the author's on demand individual printed copy of e-journal for maintaining record in hardcopy and for subscription in academic institutions. (Special Issue)

Note: In this hard copy page number and article ID exactly same as online published paper.

This journal publishes theoretical, empirical and experimental papers that significantly contribute to the disciplines of Economics and Management Sciences. Using a wide range of research methods including statistical analysis, analytical work, case studies, field research, book reviews, literature surveys, historical analysis and articles examining significant research questions from a broad range of perspectives in Economics and Management.

We welcome articles on every topic that is in any sense related to Economics and Management Strategies and its various facets. Within our scope are all aspects of Management related to strategy, entrepreneurship, innovation, information technology, and organizations as well as all functional areas of business, such as accounting, finance, marketing, and operations. For the scope of Economics, authors may consider choosing the topics from a wide range of topics like managerial economics, financial economics, public finance, econometrics, green economics, political economy, resource economics, population economics, economic growth, national income, fiscal and monetary policies, micro and macro economics and the like. We include studies on organizational, managerial, and individual decision making, from both normative and descriptive perspectives.

Publication Date and Frequency: Four issues per year.

Submission: Authors are requested to submit their papers electronically to with mention journal title in subject line.

Email:- Submission@kaavpublications.org, kaavpublications@gmail.com

To view journals, pls visit:- www.kaavpublications.org,

To view published books, pls visit:- www.kaav.org

Dr. Lata Jain
Professor & Head
Dept. of Economics
Shri Atal Bihari Vajpeyee
Govt. Arts & Commerce College, INDORE

	STUDY OF SQL INJECTION ATTACKS AND PREVENTION **Dr. Bhavna Bajpai**	155-161
	ROLE OF QUALITY EDUCATION IN NATION BUILDING **Dr. Kamlesh Patodi**	162-165
35.	उद्यमिता विकास में विकासात्मक संस्थाओं की भूमिका रणजीत सिंह रावत	166-168
36.	विद्यालयीन किशोरों के मूल्यों का आवासीय पृष्ठभूमि के संदर्भ में अध्ययन डॉ संदीप सोनी, बबीता दत्त	169-171
37.	भारतीय औद्योगिक विकास बैंक द्वारा उत्पादकता वहिद में योगदान का मूल्यांकन सपना शर्मा	172-175
38.	मध्यप्रदेश जनजाति विकास में विकेन्द्रीकृत योजना की भूमिका दशरथ मण्डलोई, डॉ. सुनील मोरे	176-177
39.	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रयोजनमूलक हिंदी की उपयोगिता डॉ. पिंकी मिश्रा	178-181
40.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के निर्णयन चिंतन कौशल पर उपचार एवं समस्या समाधान की अंतक्रिरया के प्रभाव का अध्ययन अर्चना दुबे, मनीषा टोंके	182-187
41.	स्वरोज्गारस्त महिलाये एवं सरकारी योजनाये डॉ. राधा बड़ोले	188-190
42.	महिलाओं की स्थिति के विविध आयाम कमलेश सागौरे	191-193
43.	कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न एक ज्वलंत समस्या डॉ. बी.एल. शर्मा, अर्चना शिन्दे	194-196
44.	ब्रेनड्रेन से प्रभावित- भारतीय शिक्षा पद्धति डॉ. सुशमा शाही	197-199
45.	जिला सहकारी बैंक की सेवाओं के प्रति ग्राहक संतुष्टि का अधययन प्रकाश पटेल, डॉ. एस. एम. अनस इकबाल	200-202
46.	म.प्र. के महिला उद्यमी विकास में संचालित विभिन्न योजनाओं का अध्ययन Santosh Katare, Dr. Mahesh Gupta	203-206
47.	वर्तमान में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के गीता अध्ययन की प्रासंगिकता संगीता कुमारी	207-212

Dr. Lata Jain
Professor & Head
Dept. of Economics
Shri Atal Bihari Vajpeyee
Govt. Arts & Commerce College, INDORE

48. मध्यप्रदेश शासन द्वारा विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं का युक्तियुक्तकरण का अध्ययन ([illegible] एवं उद्योग केन्द्र धार के संदर्भ में)

Dilip Kumar Parsendiya

49. प्रधानमंत्री आवास योजना का विवरणात्मक अध्ययन

साजिद मंसूरी

50. मध्यप्रदेश महात्मागांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना 221-22[illegible]

डॉ. शिवेन्द्र शर्मा

51. म.प्र. में लघु उद्योग के विकास में वित्तीय संस्थाओं का योगदान 225-229

सुरेन्द्र सेनानी

52. भारत के आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की प्रासंगिकता वर्तमान खुदरा (RETAIL) क्षेत्र के संदर्भ में 230-236

डॉ. लता जैन

53. मानव संसाधन प्रबंध का विकास 237-239

ऊँकार सिंह रावत

54. ROLE OF ETHICS IN BUSINESS ORGANIZATIONS 240-242

Shalini Anand, Nasreen Javed

Dr. Lata Jain
Professor
Dept. of Economics
Shri Atal Bihari Vajpeyee
Govt. Arts & Commerce College, INDORE

Kaav International Journal of Economics, Commerce & Business Management

(A Refereed Blind Peer Review Journal)

भारत के आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की प्रासंगिकता वर्तमान खुदरा (RETAIL) क्षेत्र के संदर्भ में

डॉ. लता जैन

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शा.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर

Special Issue Part-02
Paper Received: Nov 20th -Dec 05th, 2019
Paper Revised: Dec 15th -Jan 03rd, 2020
Paper Accepted: Jan 07th - Jan 12th, 2020

Article Info

ISSN: 2348-4969
Volume -7, Year-(2020)
Issue-01 (JAN-MAR)
Article Id:-
KIJECBM 2020/V-7/ISS-1/ IC-PSGBTSED-52

© 2019 Kaav Publications. All rights reserved

Important Words
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश
Foreign Direct Investment
खुदरा बाजार
Retail Market
अन्तर्प्रवाह
Inflow
विनिर्माण क्षेत्र
Services Sector
विनियोग
Investment
एकल ब्रांड
Sigle Brand
बहु ब्रांड खुदरा बाजार
Multi brand Retail Market
पोर्ट फोलियो विनियोग
Port Folio Investment

Abstract सारांश

बाजार खुल गया है। अब सौदे शुरू होने का वक्त है। भारत की वर्तमान सियासत ने अपने सबसे बड़े कारोबार को विदेशी पूंजी के लिये ऐसे अनोखे अंदाज में खोला है कि अब बाजार के भीतर नए बाजार खुलने वाले हैं। विदेशी पूंजी के बड़े फैसले अब राज्यों की राजधानियों में होगें, जहाँ वालमार्ट, टेस्को, कार्फू जैसे ग्लोबल रिटेल दिग्गज नीतियों को 'प्रभावित' करने की अपनी क्षमता का इम्तिहान देंगे। सौदों का दूसरा बाजार खुद देशी रिटेल उद्योग होने वाला है और लगभग 1150 अरब रू. के देशी संगठित रिटेल उद्योग में कम्पनियों व ब्रांडों की मंडी लगने वाली है। जिसमें ग्लोबल रिटेलर कंपनिया ग्राहक होगी। भारत वर्ष का दैत्याकार खुदरा बाजार आज क्रान्तिपथ की ओर अग्रसर हो रहा है। करीब 50 करोड़ वाले 'मध्यमवर्गीय' वर्ग के उपभोक्त व्यवहार और उसकी क्रय अभिवृत्तियों में आने वाले परिवर्तन पर देशी–विदेशी उद्यमियों में भारतीय खुदरा बाजार में प्रवेश करने की होड़ सी लगी हुई है।

वास्तव में ग्लोबल रिटेल का सौदा फूल और काँटों का मिलाजुला कारोबार है। विदेशी निवेश को लेकर यह शायद पहला फैसला है जिसमें राज्य सरकारें विदेशी कम्पनियों की आमद तय करेगी।

Dr. Lata Jain
Professor
Dept. of Economics
Shri

भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का अर्न्तप्रवाह –

इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का स्वरूप 2001 के बाद अर्न्तराष्ट्रीय परिभाषा के अनुरूप बदल चुका है। रिजर्व बैंक के अनुसार, इसका कारण घरेलु अर्थव्यवस्था में आर्थिक गतिविधियों की सतत् मजबूती थी जिससे वित्तीय, निर्माण एवं विनिर्माण क्षेत्रों में अन्तर्प्रवाहों में वृद्धि हुई। पोर्ट फोलियों निवेश में भी तेजी से वृद्धि यह 2006–07 में 7,004 मिलियन डालर से बढ़कर 200 में 27,270 मिलियन डालर तक पहुंच गया। जैसा कि ता नं. 01 में निवेश में हुई तेज वृद्धि को दर्शाया गया है–

तालिका विभिन्न माध्यमों से विदेशी निवेश अन्तर्प्रवाह

अमेरिकी मिलियन डॉलर

		2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
A	प्रत्यक्ष निवेश जिसमें	8901	22739	34728	37672	33124	23364
अ	इक्विटी	5915	16394	26757	27863	22907	13792
ब	पुनः निवेशित आय	2760	5828	7679	9032	8668	9424
स	अन्य पूँजी	226	517	292	776	1549	148
B	पोर्टफोलियो निवेश	12494	7004	27270	13854	32376	31471
	जिसमें						
अ	विदेशी संस्थागत निवेशक	9926	3226	20327	15017	29049	29422
ब	यूरो इक्विटी और एडीआरएस/जीडीआरएस	2552	3776	6645	1162	3328	3049
	कुल ए+बी	21395	29743	61998	23818	64500	54835

स्त्रोत– आरबीआई रिपोर्ट मुद्रा एवं वित्त, 2003–04 मुबई, 2004 पृ.47

अकटाड़ द्वारा 2011 में किये गये सर्वे के अनुसार भारत विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को आकर्षित करने वाला महत्वपूर्ण देश बन चुका है। परिणामस्वरूप आज रिटेल क्षेत्र में प्रत्यक्ष निवेश की स्वीकार्यता बनी है और एकल ब्रांड (सिग्नल ब्रांड) उत्पादों के खुदरा (फुटकर व्यापार) में सरकारी अनुमोदन के तहत 51 प्रतिशत तक एफ.डी.आई. की छूट दे दी गई।

अध्ययन विधि एवं उद्देश्य –

वर्तमान सरकार आर्थिक सुधारों के साथ आर्थिक वृद्धि दर को बढ़ाने का प्रयास कर रही है। इसी संदर्भ में उक्त विषय पर एक समग्र अध्ययन की आवश्यकता है। अतः समग्र अध्ययन के लिये द्वैतीयक संमकों को आधार बनाया गया है, चूंकि चिंतन एवं चिन्ता का विषय होने के कारण दैनिक समाचार पत्रों, टी.वी. न्यूज तथा विभिन्न आर्थिक पत्र पत्रिकाओं की न्यूज पर विशेष ध्यान दिया गया है।

भारतीय खुदरा बाजार का स्वरूप एवं संभावनायें :–

भारत वर्ष का दैत्याकार खुदरा बाजार आज क्रान्तिपथ की ओर अग्रसर हो रहा है। करीब 50 करोड़ वाले 'मध्यमवर्गीय' वर्ग के उपभोक्त व्यवहार और उसकी क्रय अभिवृत्तियों में आने वाले परिवर्तन पर देशी–विदेशी उद्यमियों में भारतीय खुदरा बाजार में प्रवेश करने की होड़ सी लगी हुई है। यही कारण है कि मध्यम आकार वाले शहरों में भी बड़े पैमाने पर शापिंग मॉल, शापिंग प्लाजा, डिपार्टमेन्टल स्टोर्स, आदि की स्थापना हो चुकी है। 'ए.टी. किर्यन' नामक वैश्विक सलाहकार फर्म द्वारा प्रस्तुत 'रिटेल डेवलपमेंन्ट इन्डेक्स के अनुसार विश्व के 30 बड़े खुदरा बाजारों में भारत का चीन के बाद द्वितीय स्थान है। हमारे देश में खुदरा बाजार का केवल 8 प्रतिशत कारोबार संगठित क्षेत्र में किया जाता है जो अब 15 से 20 प्रतिशत पहुंचने की संभावना है। देश के जी.डी.पी. में करीब 14 प्रतिशत योगदान देने वाले एक करोड़ छोटे बड़े रिटेल आउटलेट्स से करीब 4 करोड़ लोगों को रोजगार मिला है।

विश्व में सर्वप्रथम 1922 में अमेरिका के कंसास शहर में कन्ट्री क्लब प्लाजा नामक शापिंग मॉल की स्थापना की थी, तत्पश्चात विशाल शापिंग मॉल्स (मेगामाल्स) का शुभारंभ हुआ। 1981 में कनाड़ा के अलबर्टा प्रान्त में 800 से अधिक दुकानों वाला शापिंग मॉल द वेस्ट एडॉन्टन मॉल की स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ। इसमें करीब 450 फीट लम्बी झील के साथ–साथ वाटर पार्क, चिड़िया घर, गोल्फ–कोट, होटल व अन्य मनोरंजन व संचार सुविधायें उपलब्ध थी। इसके बाद अमेरिका, यूरोप, भारत व अनेक राष्ट्रों में मेगा मॉल्स की संख्या बढ़ी। सिंगापुर, हांगकांग, श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात जैसे राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था तो बहुत कुछ शापिंग मॉल पर ही निर्भर है।

भारत में सन् 1960 में 'अपना बाजार' के नाम से मुम्बई में सबसे पहला शापिंग मॉल स्थापित हुआ। आज भारत में करीब 100 शापिंग बड़े मॉल हैं। इनमें से दिल्ली और मुम्बई में सर्वाधिक हैं। विगत दो वर्षों में भारत में मॉल स्थापित करने का जुनून इस कदर फैला है कि वर्ष 2008 के अन्त तक देश में करीब 7.5 करोड़ वर्ग फीट जमीन शापिंग मॉल के लिये घेर ली गई है और मॉल्स की संख्या बढ़कर करीब 500 तक हो चुकी है। सबसे ज्यादा हिस्सा 74 प्रतिशत मुम्बई, पुणे, बंगलौर, हैदराबाद और दिल्ली के गुड़गांव, नोएडा, ग्रेटर नोएडा,

 Copyright 2019 Kaav Publications

KAAV PUBLICATIONS ... Stepping into New Horizon (The International Publisher)

Special Issue (PART-2)

Visit us at: www.kaavpublications.org; www.kaav.org

Ref No.: KIJECBM 2020/V-7/ISS-1/IC-PSGBTSED-52

ISSN: 2348 - 4969

Impact Factor (2018): 8.9901

Certificate of Publication

KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT

A Refereed Blind Peer Review Quarterly Online Journal (KIJECBM)

This is to certify that

डॉ. लता जैन, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शा.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर

has written an article/research paper on entitled

“भारत के आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की प्रासंगिकता वर्तमान खुदरा (RETAIL) क्षेत्र के संदर्भ में”

Is Approved by the Review Committee, and is therefore published in (KIJECBM) In Volume-07 Issue-01 Year 2020

Delhi-96, Kaav Publications

Dr. Lata Jain
Professor & Head
Dept. of Economics
Shri Atal Bihari Vajpeyee
Govt. Arts & Commerce College, INDORE

KAAV PUBLICATIONS
Stepping into New Horizon
(The International Publishers)
Visit us at: www.kaavpublications.org; www.kaav.org
ISSN: 2348 - 4969
Special Issue (PART-1)
Impact Factor (2018): 8.9901
Ref No.: KIJECBM 2019/V-6/ISS-4/IC-PSGBTSED-34

Certificate of Publication

KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT

A Refereed Blind Peer Review Quarterly Online Journal (KIJECBM)

This is to certify that

Dr. Alka Jain, Associate Professor, Shri Atal Bihari Vajpayee Govt. Arts and Commerce College, Indore

has written an article/research paper on entitled

"Study of Windows Theory of Happiness"

Is Approved by the
Review Committee, and is therefore published in (KIJECBM)
In Volume 06 Issue 04 Year 2019

Delhi-96, Kaav Publications

Special Issue (PART-1)
Volume - 6 Issue - 4

KAAV™

International Journal of Economics, Commerce and Business Management

A Refereed Blind Peer Review Quarterly Journal

8th International Conference on

"Paradigm Shift in Global Business Practices and Socio Economic Development"

Dec 14, 2019

ISSN: 2348 - 4969
IF: 8.9901(2018)

VISHISHT SCHOOL OF MANAGEMENT

		Author(s)	
	A Study of Digital Humanities among Undergraduate Media Students	Dr. Lalit Engle	66
	Environment Technology	Leena Lakhani	66
	Necessity of Green Building	Leena Lakhani	67
	Challenging Issues Of Tribal Higer Education In Kattiwada, Alirajpur (M.P.)	Shailendra Sharma, Sadhana Streubel	67
	प्रधानमंत्री जन धन योजना (वित्तीयसमावेशन) : जागरूकताका एक अध्ययन	डॉ. संजय प्रसाद, डॉ. साचिन शर्मा, संजय वर्मा	67
	Value Based Education System in India: A Holistic Development Approach	Dr. Hem Ahuja	68
	21वी सदी में चन्दसेन विराट के गीतों की प्रासांगिता	जयभीम यादव	68
	शिशुपालवध महाकाव्य में प्रकृति चित्रण	अनिल गुवेल	68
	A Study of Environmental Awareness and Issues Related to Environmental Protection among Secondary School Students of Ahmedabad City	Dr. Smita Dave	69
	Effectiveness of Developed Instructional Strategies in Environmental Education on Environmental Ethics Teacher Trainees of Indore City	Sapna Chhabriya, Dr. Rama Mishra	69
2073	A Study on Application of Vedic Mathematics in Real Life	Jitendra Jaiswal	70
2074	Women Empowerment: Analysis of Government's Educational Schemes for Women in India	Dr. Alka Raghunath	70
2075	निर्णयन चिंतन कौशल पर आधारित अनुदेशनात्मक आव्यूह की प्रभाविता का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान के संदर्भ में अध्ययन	अर्चना दुबे, मनीषा टोंके	70
2076	Spritual,Vedic Yoga in Our Life	Vinita Verma	70
2077	Green Marketing	Aishwarya Patil, Vanita Khobarkar	71
2078	श्रीमद्भागवत में सामाजिक मूल्य	जितेन्द्र कुमार ठाकुर	71
2079	Study of Windows Theory of Happiness	Alka Jain	71
2080	आदिवासी महिलाएँ – लोक कला एवं गीतों की महत्ता–वर्तमान संदर्भ में	डॉ. संध्या जैन	72
2081	वर्तमान परिदृश्य में समाज साहित्य एवं मीडिया के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी को परिभाषित एवं ग्लेमराईज्ड करने की आवश्यकता एक गुणात्मक एवं प्रायोगिक अध्ययन	डॉ. पूर्णिमा जोशी	72
2082	तकनीकी कांति में हिन्दी भाषा का प्रयोग	डॉ. इन्दुवाला मालवीया	73
2083	Indian Ethos: A Guide to Value Based Management	Dr. Akhilesh Kumar Mishra	73
2084	Solar Energy Products: Stepping Stone towards Environment Sustainability	Dr Deepa Katiyal, Khushboo Jain	73
2085	A Review of Indian Banking Sector and Role of Government In Its Development	Satya Kishan	74
2086	Role of Media towards Society and Business	Dr. Rajni Jain	74
2087	Evolution of Neo Semiotics in the Dynamics of Social Media Literacy	Dr. Sandesh Mahajan	74
2088	Contribution of Youth in Transformation of Business	Dr. Rajni Jain	75
2089	Role of Vocational Trainers in the Educational System	Dr. Teena Mishra	75
2090	ICT Based Innovative Tool in Effective Teaching Learning Process: Mind Mapping	Sarita Bobade	75
3001	Construction of Variance balanced Design Using incidence Matrix	Dr. Rashmi Awad, Dr. Shakti Banerjee	76
3002	Use of Zinger (ZINGBER OFFICINALE) and clove oil (SYZIGIUM AROMATICUM for Controlling Callasobruchusmaculatus Colepterea Bruchidae	Dr. Shweta Tiwari, Dr. Suja K.Sukumaran Shivkaran Aske, Pepa Kamalwa	76

An Official International Double Blind Peer Reviewed Referred Recognized Indexed Impact Factor Open Access Monthly Scientific Research Journal of The Global Association of Social Sciences www.thegass.org.in .

ISSN 2320 – 4702

THE INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES

Vol. 8, No. 5, May, 2019

Rs. 600 , $ 60 , € 60 , £ 60

n UGC Approved List of Journals, Journal No. 64811, Click here to see and verify.
n SJIF and Directory of Research Journals Indexing, DRJI, Journal ID : 586.
ournal Impact Factor Value for 2018 is 5.76, visit at http://sjifactor.com/

2019

Copyright 2012 @ All rights reserved by www.thegass.org.in

महिला अपराधियों में शराब की प्रवृत्ति का अध्ययन करना (इन्दौर शहर के संदर्भ में)

कार्किडे, सुलभा[1] एवं धवन, रंजना[2]

[1]शोध निर्देशक

[2]रिसर्च सकॉलर (समाजशास्त्र)

समाजशास्त्र विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

अपराध एक सार्वभौमिक सत्य है और इसलिए अपराध सभी समाजों में कम या अधिक संख्या में होते हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। अपराध मानव व्यवहार है, किन्तु सभी प्रकार के मानव व्यवहार अपराध नहीं हैं। सिर्फ वही मानव व्यवहार अपराध हैं जो सामाजिक मूल्यों के प्रतिकूल होते हैं। समाज अमूर्त्त है फिर भी शाश्वत सत्य है, उसी प्रकार अपराध भी एक अमूर्त्त धारणा है। कोई भी समाज ऐसा नहीं है जिसमें किसी न किसी रूप में अपराध विद्यमान न रहा हो। हर समाज में अपराध और अपराधी पाये जाते हैं। चाहे वह समाज आदिम हो अथवा आधुनिक और चाहे वह समाज शिक्षित हो या अशिक्षित। अपराध मृत्यु और बीमारी की भाँति हर काल और समाज में पाये जाते हैं।

शब्दकुंजी *: महिला अपराधि, एवं शराब की प्रवृत्ति ।*

मानव एक सामाजिक प्राणी है जो समाज के बिना अस्तित्वहीन महसूस करता है। इसलिए वह समाज से उसकी अच्छाइयों एवं बुराइयों से हमेशा जुड़ा रहता है। जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उसके मस्तिष्क पर पड़ता है।

महिलाएँ साधारणतया प्रत्येक समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसकी संख्या लगभग पुरुषों के समान ही होती है। जहाँ तक भारतीय समाज का प्रश्न है स्त्रियों की स्थिति काफी उच्च रही है। हिन्दू समाज में पुरुष के अभाव में स्त्री के, स्त्री के अभाव में पुरुष को

Socio-2

Dr. Shraddha Malviya

ISSN 2320 – 4702

An Official International Double Blind Peer Reviewed Referred Recognized Indexed Impact Factor Open Access Monthly Scientific Research Journal of The Global Association of Social Sciences www.thegass.org.in .

THE INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES

Vol. 8, No. 7, July, 2019

Rs. 600 , $ 60 , € 60 , £ 60

Included in UGC Approved List of Journals, Journal No. 64811, Click here to see and verify.
Indexed in SJIF and Directory of Research Journals Indexing, DRJI, Journal ID : 586.
Scientific Journal Impact Factor Value for 2019 is 6.279, visit at http://sjifactor.com/

2019

The Global Association of Social Sciences

Dr. Shraddha

केन्द्र – राज्य सम्बन्ध पर वस्तु एवं सेवाकर का प्रभाव एक सकारात्मक विवेचन

मालवीय, श्रध्दा व्यास[1] एवं गुप्ता, मुदिता[2]

[1]शोध निर्देशक

[2]शोधार्थी

अर्थशास्त्र विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

जीएसटी एवं सेवाकर को लागू करना भारत में अप्रत्यक्ष कर के सुधार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है। बड़ी संख्या में केंद्र और राज्यों के द्वारा लगाए जा रहे करों को मिलाकर अकेला कर बना दिए जाने से करों बहुतायता और दोहरे कराधान की समस्या हल हो गई है और एक सामान्य राष्ट्रीय बाजार के लिए रास्ता साफ हो गयी है। उपभोक्ता की दृष्टि से देखें तो, सबसे बड़ा लाभ यह है कि वस्तुओं पर लगने वाले कर के बोझ में कमी आ गई है। जीएसटी के लागू किए जाने से भारतीय उत्पाद घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धा कर पा रहें हैं। किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि इससे आर्थिक विकास पर भी बहुत उत्साहजनक प्रभाव पड़ रहा है और सबसे अंत में यह कहना है कि इस कर में पारदर्शिता है और अब सरकार एवं उद्योगपति मिलकर विकास की नीतियां तैयार रहें हैं।

***शब्दकुंजी** : केन्द्र – राज्य सम्बन्ध, तथा वस्तु एवं सेवाकर।*

भारत में 1 जुलाई 2017 को विभिन्न अटकलों और उहापोह के उपरान्त वस्तु एवं सेवा कर लागू हो गया । ये एक अप्रत्यक्ष कर है जिसे अनेक देशो ने काफी पूर्व से ही लागू कर दिया था । सर्वप्रथम फ्रान्स में 1954 में लागू किया और भारत में भी अर्थशास्त्रियों द्वारा इस कर का लागू होना एक बडा आर्थिक सुधार माना जा रहा है ।

IS PHYSICAL DISABILITY DIRECTLY RELATED T... PROSPECT OF GETTING JOBS ?

MALVIYA, SHRADDHA VYAS[1] & GUPTA, AMITA[2]

[1]Ph.D. Research Supervisor, Department of Sociology, Shri Atal Bi...

Government Arts and Commerce College, Indore, Madhya Prades...

[2]Ph. D. Research Scholar in Sociology, School of Social Science,

Devi Ahilya University, Indore, Madhya Pradesh, India

ABSTRACT

In the Indian context, people with disability are seen as non progressive, intellectually lower, dependent on charities or donations and difficulty to climb the latter to adulthood. Also, major discrimination happens on the basis of caste, creed, gender etc. Most often people forget the strengths and the determination these people posses despite the physical disability. Further, the part countries of the United Nations including India has embraced the Sustainable Development Goals in September 2015, where the world heads have promised to "desert nobody" being developed and have chosen to end world's neediness and accomplish full work by 2030. On the off chance that the nation needs to accomplish total destruction of destitution and full work by 2030, it can't stand to abandon huge populace including individuals with handicaps. The need of great importance is to have a fundamental change to incorporate individuals with incapacities in the nation's vision and projects. There are numerous holes in the usage of different plans that require pressing intercessions. A purposeful exertion is required to recognize these holes and in 6 stopping them. The different hindrances to work must be tended to and centered activities must be presented. This paper is mainly focused on the job opportunities or the willingness of the employer to provide people with physical disability employment that one deserves.

Keywords : *Physical Disability, and Prospect of getting Jobs.*

Socio-13

Dr. Sudhir Saxena.

ISSN 2320 – 4702
An Official International Double Blind Peer Reviewed Referred Recognized Indexed Impact Factor Open Access Monthly Scientific Research Journal of The Global Association of Social Sciences www.thegass.org.in .

THE INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES

Vol. 9, No. 3, Mar, 2020

Rs. 600 , $ 60 , € 60 , £ 60

Included in UGC Approved List of Journals, Journal No. 64811, Click here to see and verify.
Indexed in SJIF and Directory of Research Journals Indexing, DRJI, Journal ID : 586.
Scientific Journal Impact Factor Value for 2020 is 7.18, visit at http://sjifactor.com/

2020

Copyright 2012 @ All rights reserved by www.thegass.org.in

10/7/2

Dr. Sudhir Saxe

ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक स्थिति का अध्ययन

सक्सेना, सुधीर

समाजशास्त्र विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

वैदिक सभ्यता को स्पष्ट कालखण्डो में विभाजित किया जाता है – पहला 1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक के कालखण्ड को ऋग्वैदिक काल कहा जाता है तथा 1000 ई. पू. से 600 ई. पू. तक के काल को उत्तर वैदिक काल या सभ्यता कहा जाता है। इस शोध पत्र में हम ऋग्वैदिक काल में भारतीय समाज की सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन करेगें।

शब्दकुंजी : *ऋग्वैदिक काल एवं सामाजिक स्थिति।*

ऐसा माना जाता है कि ऋग्वेद में दसवां मण्डल बाद में जोड़ा गया है, इसलिए ऋग्वैदिक काल के सन्दर्भ मे मुख्य रूप से दो ही जातियों अथवा वर्गो का उल्लेख किया जाता है जिन्हें आर्य तथा अनार्य की संज्ञा दी जाती है। ऋग्वैदिक काल मे बाहय आक्रमणकारी एवं शक्ति सम्पन्न वर्ग आर्य था जिसके पास समस्त अधिकार थे जबकि यहां के निवासीयों को दास या असुर कहा जाता था जो कि अनार्य था।

ऋग्वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार या कुल होती थी । ऋग्वेद में कुल शब्द का उल्लेख नहीं है। परिवार के लिऐ गृह शब्द प्रयुक्त होता था। कई परिवार मिलकर ग्राम या गोत्र तथा कई ग्राम मिलकर विश का निर्माण एवं कई विश मिलकर जन का निर्माण करते थे। ऋग्वेद में जन शब्द लगभग 275 बार तथा विश शब्द 170 बार प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वैदिक काल में समाज निश्चय ही पितृसत्तात्मक समाज था, नारी को मातृरूप में पर्याप्त सम्मान प्राप्त था।

10/7/20
Dr. Sudhir Saxe

An Official International Double Blind Peer Reviewed Referred Recognized Indexed Impact Factor Open Access Monthly Scientific Research Journal of The Global Association of Social Sciences included in the International Serial Directories, Visit us at www.thegass.org.in

Dr. Sudhir Saxena

ISSN 2320 – 4702

International Double Blind Peer Reviewed Referred Recognized Impact Factor Open Access Monthly Scientific Research Journal of The Global Association of Social Sciences www.thegass.org.in .

Socio 4

THE INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES

Vol. 8, No. 8, Aug, 2019

Rs. 600 , $ 60 , € 60 , £ 60

cluded in UGC Approved List of Journals, Journal No. 64811, Click here to see and verify.
dexed in SJIF and Directory of Research Journals Indexing, DRJI, Journal ID : 586.
entific Journal Impact Factor Value for 2019 is 6.279, visit at http://sjifactor.com/

2019

The Global Association of Social Sciences

18/2/20
Dr. Sudhir Saxena

Vol. 8 (8) Aug (2019) ISSN 2320 - 4702

कार्यशील मुस्लिम महिलाओं में भूमिका द्वन्द की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन (महू तहसील के विशेष संदर्भ में)

सक्सेना, सुधीर[1] एवं कदम, सोनू[2]

[1]शोध निर्देशक

[2]शोधार्थी

समाजशास्त्र विभाग, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

महिलाओ की स्वतंत्रता की उसके आगे आने की अथवा पुरूषो मे उसकी समानता की तब हम सोचने को विवश होते हैं, समाज में उसकी दयनीय परिस्थिति को लेकर। आज भारत में स्त्रियों की सामाजिक–आर्थिक राजनैतिक प्रस्थिति–प्राचीन और मध्यकाल से अधिक ऊँची है। उन्हें अनेक अधिकार (सामाजिक और वैधानिक) प्राप्त हैं। उन्हें अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है। इसकी आवाज में शक्ति है और वे सार्वजनिक मामलों में अधिक भाग लेती हैं। पुरूष प्रधान समाज की सोच में अभी उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है। साथ ही हमारी लचर न्याय व्यवस्था के कारण यदि कोई महिला सरेआम किसी अत्याचार का शिकार होती है तो समाज के लोग उसका बचाव करने से भी डरते हैं। अतः उसे समाज और भीड़ से भी अपनेपन में माहौल मिलने कि संभावना कम ही रहती है।

शब्दकुंजी *: कार्यशील मुस्लिम महिला, एवं भूमिका द्वन्द ।*

प्रस्तावना

किसी भी समाज का सर्वांगीण विकास तभी संभव होगा जब उसमें महिलाओं की बराबर भागीदारी हो। भारतीय समाज में महिलाओं की लगभग आधी आबादी है। देश की आधी आबादी की विकास की प्रक्रिया में भागीदारी मुहैया कराए बिना देश की समृद्धि सुदृढ़ सामाजिक संरचना एवं सर्वांगीण विकास की परिकल्पना करना नितान्त ही अव्यावहारिक होगा। जब चर्चा होती है।

10/7/20
Dr. Sudhir Saxena

Soci 5 Dr. Bhagwat Rai

 Vol. 9 (2) Feb (2020) ISSN 2320 - 4702

जल संग्रहण हेतु सामाजिक सहभागिता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (खण्डवा जिले के छैगाँव माखन विकासखण्ड के तोरणी ग्राम मॉडल के विशेष संदर्भ में)

राय, भगवत सिंह

समाजशास्त्र विभाग, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

जल जीवन का जनक और पोषक भी। जल के बिना जीवन की कल्पना निरर्थक है जल केवल जीव–जन्तु व प्राणी मात्र के लिए ही नहीं अपितु वनस्पतियों के लिए भी आवश्यक है जल का हमारे जीवन एवं स्वास्थ्य से गहरा संबंध है। अतः इस जीवन रूपी 'अमृत' जल का उचित और किफायती इस्तेमाल होना जरूरी है, परन्तु ऐसा होता नहीं है जल का मनमानी रूप से इस्तेमाल किया जाता है जागरूकता के अभाव में जल स्त्रोतों का न्यायोयति उपयोग नहीं हो पाता और उनके अविवेकपूर्ण तरिके से दोहन से जल व्यर्थ बह जाता है। इसलिए जल का तकनीकी ढंग से नियोजन आवश्यक है। इस दिशा में मध्यप्रदेश के खण्डवा जिले के 'ग्राम तोरणी का जल प्रबन्धन" मिशन एक महत्वपूर्ण पहलू है। प्रस्तुत शोध पत्र में तोरणी ग्राम के 60 परिवारों को दैव निदर्शन विधि की नियमित अंकन प्रणाली से चयन कर प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों का संकलन किया गया है ।

***शब्दकुंजी** : जल संग्रहण एवं सामाजिक सहभागिता ।*

प्रस्तावना

जल सृष्टि के पाँच तत्वों में से एक है जीवन के लिए अनिवार्य तीन पदार्थों में प्राण वायु के बाद पानी का दूसरा स्थान है प्रचुर मात्रा में जल का होना हमारी पृथ्वी की विशेषता है यही कारण है सौरमण्डल के तमाम ग्रहों में एक मात्र पृथ्वी पर ही जीवन की उत्पत्ति हुई।

हमारे यहाँ शास्त्रों में जल को आदि शक्ति "अमृत" आदि कहा गया है जल ही जीवन है

Impact Factor – 6.261

SN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS … TION'S

RESEARCH JOU… EY

Multidisciplinary International E-re… Journal

PEER REFREED & INDEXE… URNAL

December -2… 9

SPECIAL ISSUE-…

भारतीय अर्थव्यवस्था : …थती व दिशा

Indian Economy : Condition & Direction

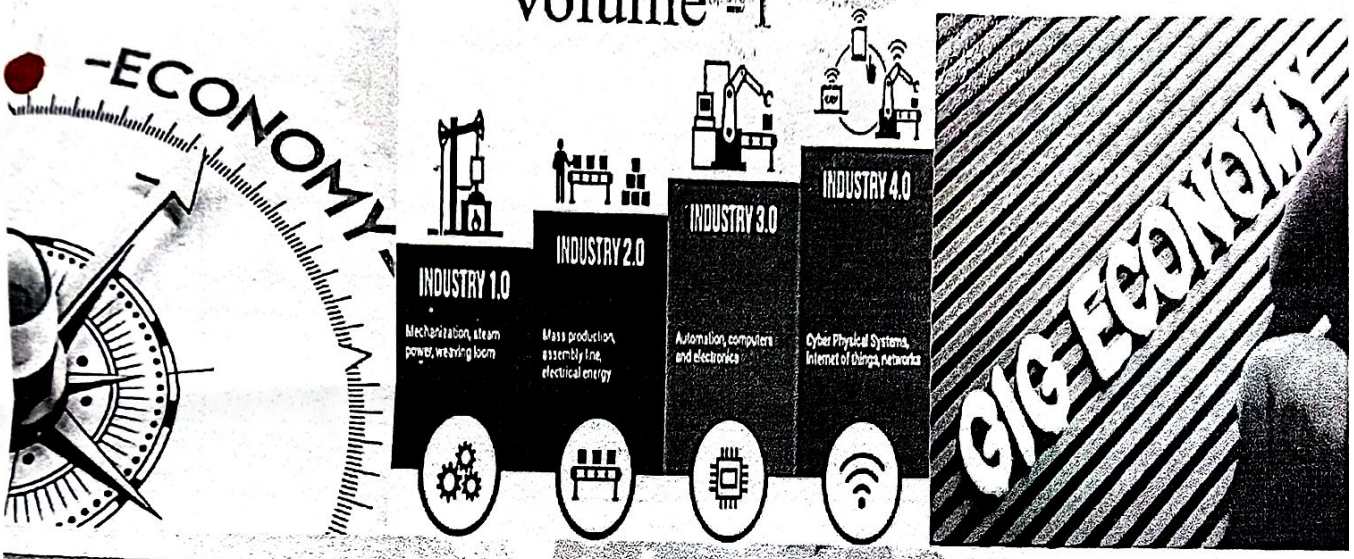

Volume - I

Guest Editor
Dr. Subodh kumar Singh
(Principal)
Prof.Ravindra B.Shende
HOD, Dept of Economics
Lokmanya Mahavidyalaya,
Warora,Dist-Chandrapur (MS)

Executive Editor:
…of. Virag S. Gawande
…ctor,
…har Social
…earch & Development
…ning Institute Amravati

Chief Editor
Mr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

…etails Visit To : www.researchjourney.net

Swatidhan Publications

Scanned with CamScanner

ISSN 2320

An Official International Double Blind Peer Reviewed Referred Recognized
Indexed Impact Factor Open Access Monthly Scientific Research Journal of
The Global Association of Social Sciences www.thegass.org.in .

THE INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES

Vol. 8, No. 8, Aug, 2019

Rs. 600 , $ 60 , € 60 , £ 60

Included in UGC Approved List of Journals, Journal No. 64811, Click here to see and verify.
Indexed in SJIF and Directory of Research Journals Indexing, DRJI, Journal ID : 586.
Scientific Journal Impact Factor Value for 2019 is 6.279, visit at http://sjifactor.com/

2019

Copyright 2012 @ All rights reserved by www.thegass.org.in

A CROSS SECTIONAL STUDY TO ASSESS THE LEVEL OF GENDER AND SOCIAL EQUITY FOCUSING GIRL CHILDREN IN AN URBAN SLUM IN A COSMOPOLITAN CITY OF CENTRAL INDIA

VYAS, ARTI

Department of Sociology, Shri Atal Bihari Vajpayee Government Arts and Commerce College, Indore, Madhya Pradesh, India

E mail avyas2405@gmail.com Mobile + 91 90093 35752

ABSTRACT

In India discriminatory attitude towards man and woman have existed for generation and affects the life of both the gender. Although the constitution of India has granted man and woman equal rights, gender disparity still remains. There are different paradigms where the gender and social equity is felt especially girl children confront issues in different areas. India has witnessed gender inequality from its early history due to its socio-economic and religious practices that resulted in a wide gap between the position of men and women in the society. In India health and population indicators that are driven by gender difference include sex ratio at birth, infant and child mortality by sex and low ages at marriage for women. At household level, disempowerment of women results in less access to education, empowerment and income and power of freedom of movement. A decline in child sex ratio (0-6 year) was observed with Indian 2011 census reporting that it stands at 914 females against 1000 males, dropping from 927 in 2001 the lowest since India's independence. In 2001 census literacy among female in 54.1% as compared to 75.8% in males, while in 2011 census the literacy rate among was 65.46% female as compared to 82.14% in male. India rank 132 out of 187 countries on the gender inequality

ISSN 2320 – 4702

An Official International Double Blind Peer Reviewed Referred Recognized Indexed Impact Factor Open Access Monthly Scientific Research Journal of The Global Association of Social Sciences www.thegass.org.in .

THE INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES

Vol. 9, No. 3, Mar, 2020

Rs. 600 , $ 60 , € 60 , £ 60

duded in UGC Approved List of Journals, Journal No. 64811, Click here to see and verify.
exed in SJIF and Directory of Research Journals Indexing, DRJI, Journal ID : 586.
ntific Journal Impact Factor Value for 2020 is 7.18, visit at http://sjifactor.com/

2020

10.7.2020

Copyright 2012 @ All rights reserved by www.thegass.org.in

समाज में सामाजिक अनुसंधान का महत्व

व्यास, आरती

समाजशास्त्र विभाग, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

सामाजिक शोध सामाजिक घटनाओं से सम्बन्धित तथ्यों के खोज की एक विधि हैं। यह सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों ही रूप से समाज को लाभ पहुँचाकर समाज के विकास में सहायता करती हैं। सैद्धांतिक रूप से यह हमारे ज्ञान में वृद्धि कर हमारा मार्गदर्शन करती हैं, वहीं व्यावहारिक रूप से यह सामाजिक समस्याओं के समाधान में हमारी सहायता करती हैं। इसके मार्ग में कतिपय बाँधऐं भी है जिन्हें दूर कर इसे और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।

***शब्द कुँजी** : सामाजिक शोध, सामाजिक घटना, समाज कल्याण, एवं कल्याणकारी राज्य।*

समाज एक गतिशील और परिवर्तनशील व्यवस्था है। अनेक आंतरिक और बाह्य कारकों के परिणामस्वरूप समाज निरंतर प्रगतिशील और परिवर्तित होता रहता है। समाज को सुनियोजित तरीके से परिवर्तित करना वर्तमान प्रगतिशील समाज के लिए नितांत आवश्यक है, किन्तु इसके लिए समाज का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक ज्ञान का होना भी आवश्यक है। समाज संबंधी यह ज्ञान अनुसंधान के माध्यम से मानव को प्राप्त होता है। अनुसंधान मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति का प्रतीक है। अपनी जिज्ञासा को शान्त करने और नये तथ्यों को जानने की मानविय अभिलाषा ने ही अनुसंधान को जन्म दिया। अनुसंधान के द्वारा ही मानव सभ्य और सुसंस्कृत जीवन व्यतीत करने में सक्षम हो सका है।

अनुसंधान का अर्थ है – खोज करना। यह एक ऐसी व्यवस्थित पद्धति है, जिसमें वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग द्वारा वर्तमान ज्ञान का परिमार्जन, उसका विकास अथवा किसी नये तथ्य की खोज द्वारा ज्ञान कोष में वृद्धि की जाती है। अनुसंधान की इस वैज्ञानिक पद्धति

Dr. Balu T Khe.

साहित्य, कला आणि लोकसंस्कृतीला वाहिलेले त्रैमासिक

Marathi (1)

तिफण

वर्ष १० वे अंक - ४ था जानेवारी ते मार्च - २०२०

भाग - ३ व ४

UGC CARE Listed Journal
ISSN 2231-573X

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

❖ संपादक ❖

डॉ. शिवाजी हुसे

मराठी विभाग प्रमुख

शिवाजी महाविद्यालय, कन्नड, जि. औरंगाबाद.

- अंक - चौथा - जानेवारी ते मार्च - २०२०
SSN 2231 - 573X

भाग - ४

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	मराठी वीरशैव वाङ्मय आणि संशोधनाच्या शक्यता प्रा. बाळू मोहन तिखे	१-८

१. मराठी वीरशैव वाङ्मय आणि संशोधनाच्या शक्यता

प्रा. बाळु मोहन तिखे
सहा. प्राध्यापक, मराठी विभाग, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एंव वाणिज्य महाविद्यालय, इंदोर.

प्रास्ताविक

सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थित्यंतरातून मध्ययुगीन कालखंडात अनेकविध संप्रदाय उदयास आले. त्यांनी आपआपल्या धर्म संप्रदायाच्या प्रचार - प्रसारासाठी भक्तीला केंद्रस्थानी ठेवून विपुल प्रमाणात साहित्य रचना केली. या वाङ्मयातून तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय मूल्ये अधोरेखीत झालेली आहेत. त्यामध्ये 'वीरशैव' संप्रदायाची भूमिका देखील महत्वाची आहे. परंतु संशोधनाच्या दृष्टिकोनातून 'वीरशैव' संप्रदाय फारसा पुढे आलेला दिसत नाही.

वीरशैव संप्रदायाची पूर्वपीठिका

वीरशैव संप्रदाय प्रामुख्याने एकेश्वरवादी आहे. 'वीरशैव सिद्धांत' ही शैव दर्शनाची प्रमुख शाखा आहे. त्यालाच 'शक्ति विशिष्टाद्वैत' सिद्धांत असेही म्हणतात. त्यालाच आपण लिंगायत म्हणतो. शैव दर्शनातील तत्वप्रणाली म्हणून 'कामिक-वातुला' ला मान्यता आहे.

'विरोधरहित शैव वीरशैवं विदुर्बुधाः ' हे या तत्वप्रणालीचे वेगळेपण दिसून येते. 'षट्स्थल' हे एक स्वतंत्र तत्व या संप्रदायात दिसून येते. तसेच 'सिद्धांत शिखामणि' हा धर्मग्रंथ आहे. चातुर्वर्ण्यव्यवस्था अमान्य करणारा हा आस्तिक संप्रदाय होय.

वीरशैव संप्रदायाची स्थापना

वीरशैव संप्रदायाची स्थापना २८ आयामावर आधारित असून ती कर्नाटकात होऊन त्याचा प्रचार - प्रसार महाराष्ट्रात झाला. या संप्रदायाची स्थापना पंचाचार्यांनी केली. त्यांना पुराण - पुरुष मानले जाते. जगदगुरु श्री रेवणासिद्ध, जगदगुरु श्री एकोरामाध्य, जगदगुरु श्री मरुळसिद्ध, जगदगुरु श्री. पंडिताराध्य, जगदगुरु विश्वाराध्य यांना पंचाचार्य म्हणून ओळखले जाते. असे मानणारा एक गट आहे. या संदर्भात प्रा. र.बा. मंचरकर आपल्या 'वीरशैव संप्रदाय' या ग्रंथात म्हणतात की, 'पंचाचार्यातील एकोराम हे या पंथाचे संस्थापक होते अशी एक दंतकथा आहे. सोमनाथ मंदिरातील एक शिलालेख तिला पाठबळ देणारा आहे."[१] असे असले तरी वीरशैव संप्रदायाची स्थापना श्रीबसवेश्वरांनी केली असे मानणारा देखील एक गट आहे. त्यांच्या क्रांतीकारक विचारांनी संप्रदायाचा प्रचार- प्रसार व्यापक प्रमाणात केल्याचे दिसते.

एकीकडे वीरशैव धर्म हा शैवांपासून स्वतंत्र, स्वायत्त आणि वेगळा असल्याचे नमुद करतांनाच तो प्राचीन आणि शैवापुर्वीचा असल्याचे अनेकि ठिकाणी नमुद करण्यात आलेले आहे. त्याचबरोबर यापैकी काही विद्वान बसवेश्वर हे वीरशैव (लिंगायत) धर्माचे संस्थापक असल्याचे नमुद करतात. या संदर्भात रां.चिं.ढेरे आपल्या प्राचीन मराठीच्या नवधारा या ग्रंथात असे म्हणतात की, "लिंगायत हे वीरशैवांहून प्राचीन आहेत. वीरशैव ही संज्ञा बसवप्रणीत शैव आंदोलनात उदय पावली असावी,

Dr. Anoop Kumar Vyas

International Journal of Research and Analytical Reviews

An open Access, Peer Reviewed, Refereed, Indexed, online and printed International Research Journal

Approved by UGC I Journal No. 43602

E ISSN 2348-1269
Print ISSN 2349-5138

Certificate of Publication

This is to certify that Prof. / Dr. Nikita Agarwal & Dr. Anoop Vyas has / have contributed a paper as author / co-author to

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS

COSMOS Impact Factor 4.236

Title: "An Agency-wise Performance Analysis of MUDRA Yojana"

and has got published in volume 6, Issue 2, **April – June, 2019.**

The Editor in Chief & The Editorial Board appreciate the Intellectual Contribution of the author / co-author.

Editor in Chief

[cut off] Agency-wise Performance Analysis of MUDRA Yojana"

[1]Nikita Agarwal & [2]Dr. Anoop Vyas
[1]Research Scholar, [2]Supervisor
[1]Department of Commerce
[1] SABV Govt. Arts & Commerce College, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore, India

Received: March 06, 2019 Accepted: April 14, 2019

ABSTRACT: : *In recent times, financial inclusion has been one of the most important objectives of the government to achieve in order to ensure a holistic growth of the economy. A large section of the society mainly the rural and the weaker sections remain away from the formal credit system of the country. These sections have a great potential for starting a small business in a field other than the agriculture and create a means of livelihood for themselves as well as the other population of the country. However, they lack access to financial help from formal sources such as banks and other financial institutions due to lack of awareness and accessibility to these sources. Thus, in order to overcome the issue regarding finance, the Government of India has started a scheme namely PradhanMantriMudraYojana (PMMY) under which they would help in the development of micro enterprises and refinance those institutions that will provide loans to micro entrepreneurs. The scheme has registered various agencies such as commercial banks, micro-finance institutions, non-banking financial companies etc. as their working partners. The current paper outlines the performance of each of these institutions in terms of their contribution under the scheme since its inception as well as draws a comparative analysis of their achievements.*

Key Words: *Entrepreneurs, Financial Inclusion, Institutions, Micro enterprises, MUDRA, PMMY*

Introduction

In recent times, the measurement of the growth of a nation is not only limited to factors such as gross domestic product, per capita income or national income but has now widened by many folds. Inclusive growth is the term that is used to measure the real growth of an economy. By inclusive growth we mean equal distribution of services to the mass population of a nation. Services such as banking and finance, insurance, transportation etc. must reach the rural and the weaker sections of the society to ensure holistic growth of the country. The government of India has been constantly working towards the upliftment of the weaker sections of the society by granting the resources such as funds and equipments for their livelihood means. The government has initiated various schemes to grant credit facilities to the rural and deprived sections of the society to encourage them to take up economic activities such as agriculture, small entrepreneurial activities, non-farm activities and such activities which require less investment and can give returns sufficient to meet the needs of a family. MSME sector is considered to be one of the most promising sectors having a high potential for economic growth. It gives employment to a large number of workforce as most of these units are labour oriented and also constitutes a high share in the total non agriculture Gross Domestic Product as well as the exports of the country. However, a large part of the MSME sector still remains out of the reach of the formal lending mechanism of the nation. According to MSME Pulse report published by Transunion CIBIL and SIDBI in March 2018, only 5 million units out of the total 51 million units have access to formal credit. The government's measures such as digitalization, implementation of GST and bank recpaitalization plan are expected to push the credit growth in the MSME sector.

MUDRA Scheme

Micro enterprises are considered as an important pillar of the economy as they account for 90% of non agriculture employment in the country. But still most of these units do not have access to formal credit facilities and rather they have to depend on informal sources such as family or friends to fulfill their credit requirement. This also leads to excessive exploitation of these entrepreneurs as they are forced to pay a large amount in the form of interest. To overcome such situations, the government has launched a scheme named PradhanMantriMudraYojana (PMMY) under the Honorable Prime Minister Mr. NarendraModi on April 08, 2015. Micro Units Development & Refinance Agency (MUDRA) has been created as a part of this scheme. The objective of PMMY was to bring the micro units under the formal credit mechanism as a part of the financial inclusion process. The core operations of MUDRA is to provide refinance support to the lenders who finance micro units engaged in manufacturing, trading or service sectorsupto Rs 10 Lakhs. MUDRA

Dr. Ashis Pathak — Anne-1

ERM Publications

Educational Research Multimedia & Publications
S.N. 21, Plot No 24, Mirza Ghalib Road
Malegaon Nasik, 423203 Maharashtra India

08/06/2019 Comm-2

Certificate

The Editorial Board of

INTERNATIONAL JOURNAL OF MANAGEMENT STUDIES (IJMS)

(UGC Approved - Journal No. 44925)

(EISSN: 2231-2528 ISSN: 2249-0302)

is hereby awarding this certificate to

Dr. Ashish Pathak,
Professor of Commerce
Sh. A.B.V.G.A.C.C.,
Davv university, Indore, India.

Tripta Rani,
Research Scholar,
Sh. A.B.V.G.A.C.C.,
Davv university, Indore, India.

for the publication of the research paper entitled

A Study on Buying Behaviour of Individuals for Financial Products- with Special Reference to Delhi-NCR

Published in – Volume VI, Special Issue-3, June 2019

Educational Research Multimedia & Publication
Malegaon(Nasik)
Maharashtra
India

V.S. More

Dr. V. S. More,
Chairman,
Editorial Board

Dr. Arif Anjum
Managing Editor

UGC APPROVED REFEREED JOURNAL
(Notification No.F.1-2/2016 (PS) Amendments dated 10th January, 2017)

crossref Member

INDIAN JOURNAL OF COMMERCE AND MANAGEMENT STUDIES Impact Factor : 2.6

International Refereed Social Sciences Journal Impact Factor : 3.19
RESEARCHERS WORLD
JOURNAL OF ARTS, SCIENCE & COMMERCE

International Journal of Management Studies
http://www.researchersworld.com/ijms/

ISSN(Print) 2249-0302 ISSN (Online)2231-2528

DOI : 10.18843/ijms/ v6si3/04
DOI URL :http://dx.doi.org/10.18843/ijms/v6si3/04

A Study on Buying Behaviour of Individuals for Financial Products- with Special Reference to Delhi-NCR

Dr. Ashish Pathak,
Professor of Commerce
Sh. A.B.V.G.A.C.C.,
Davv university, Indore, India.

Tripta Rani,
Research Scholar,
Sh. A.B.V.G.A.C.C.,
Davv university, Indore, India.

ABSTRACT

Customer is the king of business; we have been studying this since the evolution of marketing. The marketing activities start from customer and ends with customer. Customers make purchases so that they can satisfy their needs and a marketer's job is to identify those needs and satisfy them by studying and identifying the factors which influences the behaviour of consumer. In general sense, Consumer behaviour implies the study of consumers in relation to their process of select, buy, consume and dispose of products and services. As we have entered the twenty-first century, The Financial Industry in India has opened up like never before. There are number of financial institutions offering various types of financial products and services. This paper will cover the consumer decision making regarding financial products, the factors which influence the decision making and preferences of consumers for the various financial products in Delhi-NCR.

Keywords: Consumer behaviour matrix, Consumer decision making, Financial products.

INTRODUCTION:

In the current scenario there are lots of financial products being offered by various financial institutions operating in the Indian financial market. But Banks deposits, Post office schemes, Pension funds, Life insurance policies, gold and real estate are considered to be the safest investments by the consumers. On the other hand shares, debentures and mutual funds are not considered to be safe investment due to involvement of high risk factor and dynamic market conditions.

As per the latest data, the bank fixed deposits use to attract the consumer, because it is comparatively safest investment avenue with the fixed rate of interest. Also the network of public sector banks is widely spread across India including the rural areas. Which makes bank fixed deposits more accessible to the common man of rural areas as well.

Consumers are traditionally investing in Gold as it is safe and it is a part of traditions and culture. Gold is being gifted to relatives on the occasions of wedding, birth of a child or on any festival. It is considered to be safe investment, as it protects you from inflation. There is a high demand in India for gold which leads it to be the largest importer of gold in the world. Consumer also invests in real estate but the difference between earlier investments and now is that earlier only upper class people used to invest in real estate. But now, with the increased income levels and availability of easy funds (Housing loan and finance), it has become affordable to the middle class as well. The other popular investment avenue like Life insurance is emerging as the most preferable financial product. As it is safe and provides tax benefits to the investors.

As per the latest savings data by RBI, the composition of (changes in) gross financial savings (in percent) is as follows:

Comm-3

4

Dr. Prakash Garg

शब्द-ब्रह्म

भारतीय भाषाओं की अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

पीयर रिव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रो. डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे
प्रधान संपादक

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2019

आदिवासियों के आर्थिक विकास में कृषि उपज का योगदान

[illegible]

संगीता कटारा (शोधार्थी)
डॉ. प्रकाश गर्ग
प्राध्यापक, वाणिज्य
श्री अटलबिहारी वाजपेयी शा.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मध्यप्रदेश का झाबुआ जिला आदिवासी बहुल है। यहाँ की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। आजादी के बाद से यहाँ पर विकास की चुनौती हमेशा रही है। कम वर्षा और सिंचाई की साधनों की न्यूनता के कारण कृषि कार्य कठिनाईयों भरा रहा है। इसके बावजूद शासकीय योजनाओं और आदिवासी संस्कृति के मेल से यहाँ के आदिवासियों के आर्थिक विकास में कृषि उपज का योगदान महत्वपूर्ण है प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

झाबुआ नाम सुनते ही हमारे मन मस्तिष्क में अनेकों चित्र उभरकर सामने आते हैं, तरह-तरह की कल्पनायें हम करने लगते हैं। अनेक लोगों से भी यह कहते सुना है कि झाबुआ मतलब एक बहुत ही [illegible] जाना नहीं चाहता है, सभी वहाँ जाने से डरते हैं, परन्तु क्या वास्तव में यहाँ ऐसा है ? या फिर हम किसी की कही-सुनायी गयी बातों को सुनकर मात्र ही अच्छे-बुरे की कल्पना कर रहे हैं ?

यदि यहाँ की वास्तविक स्थिति को हम देखें तो अलग ही दृश्य हमारे सामने परिलक्षित होता है। यहाँ के [illegible] हाथों में तीर-कमान, फालिया, धारिया या फिर रंग-बिरंगी लट्ठ लिये हुये मिलते हैं। बिना किसी से प्रतिस्पर्धा किये ये आदिवासी अपने में ही मद-मस्त होकर नाचते हुए मिलते है। छोटे-बड़े पर्वो को अत्यन्त ही उत्साह से मनाते हुए ये छोटे-बड़े हाट-बाजारों में प्रायः मिल ही जाते हैं।

दोनों समय का पर्याप्त भोजन नसीब हो या न हो परन्तु जहाँ मौका मिले अपने पास जितना भी हो वहां खर्च करने में पीछे नहीं हटते। आने वाले कल की चिन्ता किये बिना ये अपने घर आए मेहमानों का अपनी आर्थिक स्थिति या प्रतिष्ठा से ज्यादा बढ़ चढ़कर आवभगत करने में लग जाते हैं। जैसी कल्पनाएँ उनके बारे में की जाती रही है व की जा रही है कि ये बहुत ही खतरनाक होते हैं वैसा बिल्कुल भी नहीं है। ये भाले-भाले व सीधे-सादे हैं परन्तु हाँ जहाँ पर कोई इनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाये या फिर उनको नुकसान पहुँचाने की कोशिश मात्र भी करे तो ये प्राण लेने में भी पीछे नहीं हटते हैं।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ़ीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2019

अभाव में यह जमीन बाकी समय खाली पड़ी रहती है। जिले में फसलों का औसत उत्पादन भी बोये गये क्षेत्र के अनुसार निम्न है:-

फसलों का औसत उत्पादन (कि.ग्रा.) (प्रति हेक्टर में) वर्ष 2015-16

वर्ष	चावल	गेहूँ	ज्वार	मक्का	चना
2011-12	880	2,400	1,020	1,500	840
2012-13	880	2,400	1,020	1,500	840
2013-14	880	2,400	1,020	1,500	840
2014-15	880	2,400	1,020	1,500	840
2015-16	880	2,400	1,020	1,500	840

स्रोत : अधीक्षक भू-अभिलेख झाबुआ

उपर्युक्त तालिका के आधार पर फसलों का औसत उत्पादन यदि देखा जाए तो यह बहुत कम है। चावल 880 कि.ग्रा., गेहूँ 2400 कि.ग्रा., ज्वार 1020 कि.ग्रा., मक्का 1500 कि.ग्रा. व चना 840 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर क्षेत्र में उत्पादित किया जाता है।

निष्कर्ष

यदि कृषि के तरीकों में और अधिक आधुनिक पद्धतियाँ अपनाई जाए व सभी लोग मिलकर आपसी सहयोग से सिंचाई की समस्या का समाधान अपने स्तर पर ढूंढे तो जिले में कृषि उपज का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। समूह, समितियाँ आदि बनाकर संसाधनों को इकट्ठा करे तो औसत उत्पादन और अधिक बढ़ जाएगा साथ ही फसलों का बोया जाने वाला क्षेत्र भी बढ़ जाएगा। प्रकृति प्रदत्त संसाधन तो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है ही आवश्यकता है बस इन्हें पहचानने व सही जगह इसका उपयोग करने की। झाबुआ जिले में अथाह व कठोर परिश्रम करने वाले लोग भी मौजूद है यदि इन्हें सही दिशा व मार्गदर्शन दिया जाए खेती के तौर-तरीके बदल जाए। परम्परागत फसलों के स्थान पर यदि वाणिज्यिक/व्यावसायिक फसलों के उत्पादन की सलाह दी जाए तो वास्तव में ये लोग गरीबी की दास्तां से मुक्त हो जायेंगे। यदि शासन भी कृषि उपज से संबंधित उद्योग व शीत श्रृंखला आदि को विकसित करें तो कृषि उपज को इकट्ठा बेचा जा सकता है। यदि सही दिशा में ये लोग कार्य करेंगे तो निश्चित ही [illegible]

सदर्भ ग्रन्थ

1 म.प्र. की जनजातियाँ, डॉ.एस. के तिवारी व डॉ. कमला शर्मा

2 आदिवासियों के बीच, श्री चन्द जैन

3 ग्रामीण भूगोल, डॉ. बी.एस. नेगी

4 भारतीय अर्थव्यवस्था, रुद्र दत्त (के.पी.एम. सुन्दरम)

अंकेक्षण प्राप्ति

1 कार्यालय अधीक्षक, भू - अभिलेख, झाबुआ।

2 सांख्यिकी विभाग- झाबुआ

3 जिला सांख्यिकी पुस्तिका